ओ३म्

परोपकारिणी

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - २४ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र दिसम्बर (द्वितीय) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ऋषि मेले की झलकियाँ

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

वर्ष : ५७ **अंक** : २४
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: मार्गशीर्ष शुक्ल, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९४०९ / ५९

परोपकारी

दिसम्बर द्वितीय २०१५

अनुक्रम

१. ''आर्य भारत में बाहर से आये'':....	सम्पादकीय	४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	७
३. आर्यों का महाकुम्भ : ऋषि-मेला	श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य	१४
४. आत्म-चिन्तन और मनन	रमेश मुनि	१७
५. पुस्तक समीक्षा	देवमुनि	१८
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		१९
७. 'परोपकारिणी-सभा' में भाषण	एम.वी.आर. शास्त्री	२१
८. जिज्ञासा समाधान-१०१	आचार्य सोमदेव	२९
९. सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास....	राजेन्द्र जिज्ञासु	३२
१०. भयानक पडयन्त्र	राजन स्वामी	३६
११. स्तुता मया वरदा वेदमाता-२४		३७
१२. संस्था-समाचार		३८
१३. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

"आर्य भारत में बाहर से आये" : यह मान्यता देशद्रोह है

लोकसभा में संविधान दिवस के प्रसंग में बहस करते हुए मल्लिकार्जुन खडगे ने कहा- आर्यों ने भारत पर आक्रमण करके हम लोगों को दलित और शोषित बनाया। हम आपके अत्याचारों को पिछले पाँच हजार वर्षों से सह रहे हैं। हम आपका मुकाबला करते रहेंगे। खडगे ने भाजपा को बाहर से आकर इस देश पर राज्य करने वाली पार्टी बताया। इस बात की गम्भीरता को आर्यसमाज के अतिरिक्त कोई नहीं समझ सकता। संसद सदस्य स्वामी सुमेधानन्द बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने खडगे के वक्तव्य का लिखित में विरोध किया और कार्यवाही से निकलवा दिया। हमें खडगे को भी धन्यवाद देना चाहिए, जिन्होंने इस देशद्रोही विचार की गम्भीरता को संसद में अपने वक्तव्य के माध्यम से प्रकाशित किया।

बहुत वर्ष पूर्व भी एंग्लो इण्डियन राज्यसभा सदस्य ने इस प्रकार का प्रश्न उठाया था, परन्तु उस समय किसी ने इस विचार की घातकता को समझा नहीं था। उस समय मान्य सदस्य ने सदन में कहा था- भारतीयों को अंग्रेजी भाषा से द्वेष नहीं करना चाहिए, क्योंकि संस्कृत भी भारतीयों के लिये विदेशी भाषा है। यह भारत में बाहर से आये आर्यों की भाषा है। जब इस देश के लोग संस्कृत से प्रेम करते हैं, तो फिर विदेशी भाषा के नाम पर अंग्रेजी से द्वेष क्यों करते हैं? आर्यों का भारत में बाहर से आकर बसने का विचार अंग्रेजों के मस्तिष्क की उपज है। भारत पर आक्रमण मुसलमानों ने भी किया और देश को पराधीन भी किया था। उन्होंने यहाँ की सभ्यता, संस्कृति को बलपूर्वक नष्ट करने का प्रयत्न किया। अंग्रेजों ने इस देश को दास बनाया और यहाँ की सभ्यता, संस्कृति को बुद्धिपूर्वक नष्ट करने की योजना बनाकर कार्य किया। मल्लिकार्जुन खडगे इस षड्यन्त्र के शिकार बने हैं।

अंग्रेज आज भी इस देश को खण्डित करने के प्रयासों में लगे हैं। प्रमुख रूप से इस्लाम और ईसाइयों के माध्यम से धर्म परिवर्तन द्वारा तथा दूसरे रूप से माओवादी हिंसा फैलाकर देश में अराजकता उत्पन्न करने के प्रयासों द्वारा व्यापार व आधुनिकता के नाम पर समाज में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के नाश करने के उपायों द्वारा तथा भारत में आर्य- द्रविड़ संघर्ष के काल्पनिक सिद्धान्त का उपयोग कर पाश्चात्य योरोप अमेरिका की शक्तियाँ चर्च एवं व्यापार द्वारा हिंसा, असन्तोष फैलाकर फिर से ईसाइस्तान, इस्लामिस्तान, द्रविड़स्तान तथा माओवाद के नाम से नक्सलियों के राज्य के रूप में इस देश के विभाजन का प्रयास अपनी पूरी शक्ति से करने में लगे हुए हैं। अन्य प्रयासों की चर्चा का प्रसंग यहाँ नहीं है। जहाँ तक खडगे का प्रश्न है, इसे तो स्वतन्त्रता के साथ ही समाप्त किया जाना चाहिए था, परन्तु गत साठ वर्ष के शासन ने खडगे की पार्टी का ही समर्थन किया, जो भारतीय परम्पराओं का, संस्कृति का और भाषा का नाश करने को ही देश की प्रगति का मूल मन्त्र समझती थी। इनकी दृष्टि में अंग्रेज और अंग्रेजी ही प्रगति के पर्याय हैं। परिणामस्वरूप हमारे शासन में आदिवासी जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। आदिवासी शब्द का प्रयोग करना अपने आपको बाहर से आया स्वीकार करना। इन शब्दों के अर्थों को हमने आज तक समझा नहीं, इसी कारण अपनी रक्षा में इस मिथ्या मान्यता को स्थान दिया हुआ है। हमारे बच्चे आज भी यही पढ़ते हैं कि इस देश में आर्य बाहर से आये और यहाँ के मूल निवासी द्रविड़ लोगों को पराजित कर दक्षिण में भगा दिया और अपना शासन स्थापित किया। इस मिथ्या मान्यता को इतना प्रचारित किया गया कि भारतीय संसद में कांग्रेस के नेता खडगे इस मान्यता के प्रवक्ता बन खड़े होने में अपना गौरव समझने लगे, अपने आपको द्रविड़ मूल और आर्य से भिन्न अनार्य मनाने लगे।

आज हमारे लिये एक अवसर आया है, जिसका लाभ उठाकर हमें अपनी शिक्षा से इस मान्यता को बहिष्कृत कर देना चाहिए तथा प्रशासन शब्दावली से आदिवासी जैसे शब्दों का प्रयोग निषिद्ध कर देना चाहिए। खडगे यदि आर्यों से भिन्न होते तो उनका नाम मल्लिकार्जुन नहीं होता। यदि खडगे भाजपा को विदेशी मानते हैं, तो वे श्रीमती सोनिया गाँधी को क्या कहेंगे, जिसके वे सेनापति बने हुए हैं? खडगे जी इस देश के नागरिक हैं, अपने देश से निश्चय ही प्रेम होगा, तो उन्हें इस आर्य-अनार्य सिद्धान्त और षड्यन्त्र को समझना चाहिए।

प्रथम बात किसी के लिये भी जानने की यह है कि आर्य-अनार्य शब्द जातिवाचक नहीं, गुणवाचक हैं, क्योंकि **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** कहते हुए वेद कहता है- सम्पूर्ण रूप से आर्य बनो और सब को आर्य बनाओ। जब सबको आर्य बनाया जायेगा, तब खडगे जी अनार्य कैसे रह पायेंगे? आर्य-अनार्य शब्द अच्छे और बुरे के अर्थ में हैं। मनु कहते हैं- इस देश में आर्य और दस्यु अर्थात् अनार्य रहते हैं, क्या खडगे जी अपने को चोर, डाकू कहलाना पसन्द

करेंगे? क्या चोर, डाकू, लूटेरों की कोई जाति होती है? क्या इनके लिये संविधान, कानून, पुलिस, होती है? फिर ऐसी निरर्थक विचारधारा के लिये खडगे जी अपने को उनका प्रतिनिधि कैसे कह सकते हैं? भारतीय संस्कृति, साहित्य, परम्परा से आर्य वे हैं, जो लोग श्रेष्ठ परम्परा के धनी हैं। वेद और वैदिक धर्म स्वीकार करते हैं, वे सभी आर्य है। कोई भी आर्य बन सकता है, किसी को आर्य कह सकते हैं। हमारी आर्य परम्परा में एक पत्नी अपने पति को आर्य-पुत्र कहकर पुकारती है। पाश्चात्य लोगों ने आर्य-अनार्य सिद्धान्त की कपोल कल्पना की, जिसका उद्देश्य भारतीय समाज में विभाजन उत्पन्न करना था। आर्य-अनार्य का विचार, आर्य भारत में बाहर से आये हैं- यह सिद्धान्त विद्वानों, वैज्ञानिकों की दृष्टि में खण्डित हो चुका है, परन्तु योरोप-अमेरिकी पक्ष इसका पूरा उपयोग इस देश को बांट ने में करने में लगा हुआ है। इस षड्यन्त्र को सबसे पहले ऋषि दयानन्द ने समझा था और उन्होंने अपने ग्रन्थों में इस सिद्धान्त का स्पष्ट रूप से खण्डन किया था। ऋषि दयानन्द ने लिखा- आर्यों का बाहर से भारत में आने का, भारतीय साहित्य के किसी भी ग्रन्थ में उल्लेख नहीं मिलता। यदि आर्य बाहर से आकर भारत में बसे होते तो इतने बड़े ऐतिहासिक सन्दर्भ का उल्लेख उनके साहित्य में न हो, यह असम्भव है। किसी देश से आकर बसने की घटना उस समाज में निरन्तर स्मरण की जाती है। आज कोई पाकिस्तान से उजड़कर आया, कोई आक्रमणकारी के रूप में आया, दोनों का इतिहास मिलता है। समाज में कथायें मिलती हैं, परम्परायें मिलती हैं, पुराने रीति-रिवाज, जीवन शैली के अंश मिलते हैं, क्या आर्यों की कोई परम्परा किसी तथाकथित मध्य एशिया या किसी अन्य देश में मिलती है? क्या आर्यों की भाषा मौलिक रूप से किसी दूसरे देश में बोली जाती है या इतिहास में पाई जाती है? इतना ही नहीं, इतनी बड़ी जाति का संक्रमण एक दिन में तो नहीं हो सकता, उसके उस स्थान से चलकर यहाँ तक पहुँचने के मार्ग में उनके चिह्न, अवशेष तो मिलने चाहिए। यदि बाहर से चलकर भारत को आर्यों ने जीता था, तो क्या बीच के देश उन्होंने बिना जीते ही छोड़ दिये थे? यदि जीते थे तो आज वहाँ उनका अस्तित्व क्यों नहीं है, वहाँ उनका राज्य क्यों नहीं है? आर्यों के इतिहास, संस्कृति के अवशेष वहाँ क्यों नहीं पाये जाते?

ऋषि दयानन्द कहते हैं- भारतवर्ष में सबसे पहले आकर निवास करने वाले आर्य ही हैं। शास्त्रों की, ऋषि दयानन्द की मान्यता है कि जब इस पृथ्वी का निर्माण हुआ, सम्पूर्ण जलमय संसार में से पृथ्वी का जो भाग सबसे पहले जल से बाहर निकला, वह तिब्बत था तथा सबसे ऊँचा होने के कारण उसी भाग पर मनुष्यों की सृष्टि सबसे पहले हुई। जो मनुष्य वहाँ से उतरकर सबसे पहले भारत आये और जिन्होंने इस देश को बसाया, वे ही लोग आर्य कहलाये। शेष संसार में यहीं से लोगों का जाना हुआ है। बाहर से इस देश में आने की बात मनगढ़न्त, मिथ्या और षड्यन्त्रपूर्ण है। विश्व साहित्य में आर्यों का बाहर भारत में आना लिखा नहीं मिलता, हाँ विश्व के अनेक ग्रन्थों में जिनका पुराना इतिहास मिलता है, उनमें उनके पूर्वजों का भारत से आकर वहाँ निवास करना लिखा मिलता है। ईरान के इतिहास और धर्म ग्रन्थ जिन्द अवेस्ता में उनके पूर्वजों का भारत से जाकर ईरान में वास करने का उल्लेख मिलता है। जब कोई देश जाति किसी पर विजय प्राप्त करती है तो वह अपने उल्लास और हर्ष को प्रकाशित करने के लिये अनेक प्रकार के आयोजन करती है, उसे स्थायी बनाने के लिये इतिहास लिखती है। शिलालेख, ताम्र लेख, स्तूप, स्तम्भ, भवन, स्मारक बनाये जाते हैं, परन्तु पूरे भारत में इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं मिलता, कोई चिह्न भी नहीं मिलता। इससे पता लगता है कि यह एक कपोल-कल्पना है, जो एक षड्यन्त्र के माध्यम से की गई है। इसके विपरीत ब्राह्मण ग्रन्थ, मनुस्मृति आदि प्राचीन ग्रन्थों में आर्यों के तिब्बत से भारत में आने, अनेक युद्ध जीतने आदि का विवरण मिलता है, परन्तु मध्य एशिया या किसी अन्य देश से भारत में आकर बसने का, यहाँ के मूल निवासियों को निकाल कर उनका राज्य छीनने का कोई उल्लेख प्राचीन भारतीय शास्त्रों, साहित्य या इतिहास के ग्रन्थों में नहीं मिलता, अतः आर्यों द्वारा द्रविड़ों पर आक्रमण की कल्पना मिथ्या षड्यन्त्र मात्र है।

जिन्हें हम द्रविड़, दलित, शूद्र मान रहे हैं, वे किस अर्थ में आर्यों से भिन्न हैं? भारतीय हिन्दू समाज के सवर्ण-असवर्ण दोनों ही अंग हैं। दोनों के गोत्र एक से हैं, परम्परायें, खान-पान, वस्त्र, आभूषण, पहनावा- सभी कुछ एक जैसा है। सभी के देवी-देवता, धर्मग्रन्थ, उपास्य, उपासना पद्धति- सब एक जैसे हैं। सभी राम, हनुमान, शिव, गणेश आदि की पूजा-उपासना करते हैं। व्रत, उपवास, संस्कार सभी कुछ पूरे समाज का एक दूसरे से मिलता है। सम्पन्नता-निर्धनता के आधार पर सभी में परस्परः स्वामी-सेवक सम्बन्ध पाया जाता है, अतः समग्र रूप में समाज एक है। यदि कोई अन्तर है तो विद्या या अविद्या का, सम्पन्नता या निर्धनता का, अन्याय या न्याय का अन्तर और परिणाम देखने में आता है। यह सभी समाजों में स्वाभाविक रूप से देखा जा सकता है। इसका मूल कारण भारतीय समाज का जन्मना जाति स्वीकार करने का दुष्परिणाम है। यह अज्ञान, अविद्या, पाखण्ड, शोषण, सवर्ण-असवर्ण, जन्मना जाति,

ऊँच-नीच, छुआछूत के परिणामस्वरूप, जिसका पाश्चात्य लोग लाभ उठाकर समाज में विरोध और द्वेष उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। अंग्रेजों ने पं. भगवद्दत्त के पास भी अपना सन्देश वाहक भेजा था- वे अपनी पुस्तकों में लिख दें कि जाट लोग इस देश में बाहर से आर्य के रूप में आये हैं, परन्तु पण्डित जी ने दृढ़ता से इसका निषेध कर दिया। जहाँ आर्य विद्वानों ने निषेध किया, वहीं पर धन व प्रतिष्ठा के लोभी लोगों ने अंग्रेजों की इच्छानुसार लेखन भी किया।

इस षड्यन्त्र को ऋषि दयानन्द ने समझा था और इसका सप्रमाण प्रतिकार भी किया था। सामान्य रूप से आर्यावर्त्त की सीमा मनु के श्लोक 'आसमुद्रात्' से निष्पादित करते हैं, विन्ध्याचल से सतपुडा की ओर हिमालय के मध्य आर्यावर्त की सीमा पढ़ते हैं, परन्तु इसी श्लोक के अर्थ ऋषि दयानन्द पूर्व-पश्चिम पर्वत शृंखला के मध्य रामेश्वरम् पर्यन्त स्वामी जी आर्यावर्त की सीमा का उल्लेख करते हैं। यहाँ एक घटना का उल्लेख प्रमाण रूप में ठीक होगा। स्वामी श्रद्धानन्द ने पं. लेखराम की जीवनी लिखते हुए एक घटना लिखी है कि सरस्वती हषद्वती नदियाँ आर्यावर्त की सीमा बनाती है और पं. लेखराम का ग्राम सरस्वती के दूसरी ओर पड़ता था, तो पण्डित लेखराम कहा करते थे- मेरे गाँव की इस ओर की नदी सरस्वती नहीं है, मेरे गाँव के बाद बहने वाली नदी सरस्वती है, जिससे उनका गाँव भी आर्यावर्त में आ जाता था। सचमुच में भारत में रहने वाले आर्य का गाँव आर्यावर्त से बाहर हो तो अच्छा तो नहीं लगेगा। इसी तर्क को लेकर मैंने एक बार अपने पिता जी से कह दिया- आपका गाँव आर्यावर्त में नहीं आता, एक क्षण वे स्तब्ध हुए और अगले ही क्षण बोले- तू नहीं जानता, मेरा गाँव आर्यावर्त में है क्योंकि जो संकल्प पाठ उत्तर भारत के गाँव-नगर में किया जाता है, वही मेरे गाँव में भी आदि काली से हो रहा है- **आर्यावर्ते जम्बू द्वीपे भरत खण्डे**- सचमुच में उनका प्रमाण अकाट्य था।

ऋषि दयानन्द ने वे दोत्पत्ति प्रकरण, वे दोत्पत्ति काल के निर्धारण में भारतीय समाज में श्रेष्ठकर्म करने के समय पढ़े जाने वाले संकल्प का उल्लेख किया है, उसमें जब - **आर्यावर्ते जम्बू द्वीपे भरत खण्डे**- शब्दों का पाठ करते हैं, तो सिद्ध है इस देश में आने वाले पहले लोग आर्य ही हैं और उन्होंने ही इस देश का नाम आर्यावर्त रखा। इस देश के बदले गये बाद के नामों की चर्चा तो मिलती है, परन्तु आर्यावर्त या ब्रह्मवर्त से पहले के किसी भी नाम की चर्चा विश्व इतिहास में नहीं मिलती, अत: यह कहना कि भारत में आर्य बाहर से आये- यह पाखण्डपूर्ण कथन है। भारत में आर्य बाहर से आये- यह कहना **वदतो व्याघात** अर्थात् परस्पर विरोधी है, क्योंकि इस देश का भारत नामकरण भी आर्यों का है, फिर भारत में आर्यों का बाहर से आना कैसे बनेगा।

खडगे ने लोकसभा में आर्यों के बाहर से आने की जो बात कही, उसका कारण है, आजकल किया जाने वाला दुष्प्रचार। भारत जातिगत आधार पर जो आरक्षण किया गया है, इसको आधार बनाकर इस आन्दोलन को इस देश में चलाया जा रहा है। इसके लिये अमेरिका, योरोप का ईसाई समुदाय बड़ी मात्रा में धन उपलब्ध कराता है। इस कार्य को करने वाले संगठन भारत में बामसेफ और मूल निवासी परिषद् है। पाश्चात्य लोगों ने ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, योरोप के अनेक विश्वविद्यालयों में इस मूलनिवासी लोगों के इतिहास के अनुसन्धान के लिए अनेक शोधपीठ भी स्थापित किये हैं, जिनमें डी.एन.ए तक मूल निवासियों का आर्यों से पृथक् होने की बात कही गई है। ये संगठन ज्योतिबा फूले और डॉ. अम्बेड़कर के नाम से लोगों को हिन्दू समाज से अलग करने का प्रयास करते हैं। दलित प्रकाशन के नाम से प्रकाशित दो सौ से भी अधिक पुस्तकों में यही समझाने का प्रयास किया है कि स्वतन्त्रता संग्राम का दलितों से कुछ लेना-देना नहीं है, दलितों का उद्धार अंग्रेजों ने किया है। डॉ. अम्बेडकर ने ही उनके लिये कार्य किया है, समाज में सवर्ण कहलाने वाले लोगों ने उनका शोषण किया है। अंग्रेज शासन उनके लिये अच्छा था, स्वतन्त्रता संग्राम तो सवर्णों की अपने अधिकारों की लड़ाई थी, चाहे रानी झाँसी की लड़ाई हो या महाराणा प्रताप व शिवाजी की। इनके साहित्य में ऋषि दयानन्द या स्वामी श्रद्धानन्द और आर्यसमाज या किसी अन्य संस्था द्वारा किये समाज सुधार की चर्चा नहीं मिलती। इनके साहित्य में ऋषि दयानन्द को ब्राह्मण और सवर्णों का पक्षधर कहकर निन्दा की गई।

वर्तमान में इस कार्य को करने वाले दो संगठन हैं- एक बामसेफ और दूसरा है- मूल निवासी परिषद्। ये निरन्तर दलित जातियों में भारत विरोधी, सवर्ण और असवर्ण के मध्य पृथकतावादी प्रवृत्ति बढ़ाने का कार्य करते हैं। इसके लिये इनका सैंकड़ों की संख्या में साहित्य प्रकाशित कर वितरित किया जाता है। इसी प्रकार की फिल्में बनाकर दिखाई जाती हैं। प्रतिवर्ष देश के विभिन्न भागों में इनके अधिवेशन होते हैं, जिनमें दलित समाज के लोगों को भाग लेने के लिये प्रेरित किया जाता है। सवर्ण या भिन्न विचार के लोगों को ये लोग अपने कार्यक्रम में भाग लेने की अनुमति नहीं देते। पुस्तक मेलों में दलित प्रकाशनों की दुकानों पर बिकने वाले साहित्य से इस बात को समझा जा सकता है।

शेष भाग पृष्ठ संख्या ३६ पर.......

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

ऋषि-जीवन विचार:- देश-विदेश के ऋषि भक्तों को, परोपकारी के सब प्रबुद्ध पाठकों को यह शुभ सूचना देते हुए हमारी छाती अभिमान से फूल रही है कि ये पंक्तियाँ लिखते समय प्रिय आर्यवीर राहुल तथा उसके सहयोगी सुयोग्य आर्यवीरों के पुरुषार्थ से परोपकारिणी सभा को देश-विदेश से ऋषि जीवन तथा आर्य समाज के बारे में बहुत मूल्यवान् अलभ्य स्रोतों की नई खेप प्राप्त हो चुकी है। अभी और पर्याप्त सामग्री प्राप्त होने वाली है । अब मैं जी जान से इन पर कार्य कर रहा हूँ। रात्रि सपनों में भी यही सामग्री मेरे मस्तिष्क में घूमती है।

ये युवक इस असाधारण उपलब्धि से इतने उत्साहित हैं कि एक कार्य करके आगे के लिए पूछते हैं, ''**और बताओ, क्या चाहिये? हम आप तक खोज करके पहुँचा देंगे।** ''ईश्वर की असीम कृपा से हमारे कई युवक राहुल जी के साथ जुड़कर इस कार्य में लगे हैं। सहस्रों रुपये अपनी जेब से व्यय कर रहे हैं। राजस्थान, दिल्ली,चामधेड़ा (हरियाणा का एक नन्हा-सा ग्राम), महाराष्ट्र, तैलङ्गाना के कई आर्यवीर इस करणीय कार्य में सक्रिय होकर आगे बढ़ रहे हैं।

महर्षि दयानन्द जी सन् १८६८ में काकौड़ा के मेले पर गये थे। गंगा तट पर भारी भीड़ ऋषि को सुनने के लिए उमड़ पड़ती थी- यह कई जीवनी लेखकों ने लिखा है। पुराने लेखकों में से श्री देवेन्द्र बाबू जी तथा माननीय हरबिलास जी के ग्रन्थों में काकौड़ा मेले का जो उल्लेख है, उसके तल तक हम अब तक न जा पाये। श्री हरबिलास के ये महत्त्वपूर्ण शब्द पढ़िये, **"and found Swamiji engaged in a discussion with a European missionary, an Indian Christian interpreting questions and answers. He saw that the missionary put impertinent questions but Swamiji calmly replied to them"**[1] इसका भावार्थ यह है कि श्री बालमुकुन्द डिप्टी कलक्टर ने ऋषिजी को एक यूरोपियन पादरी से वार्त्तालाप करते देखा। पादरी बहुत धृष्टतापूर्ण प्रश्न कर रहा था, परन्तु स्वामी जी अत्यन्त शान्त भाव से उसको उत्तर दे रहे थे। हरबिलास जी का यह कथन पूर्णतया प्रामाणिक है। देवेन्द्र बाबू जी ने प्रश्नोत्तर के बारे ऐसा नहीं लिखा। मेहता राधाकिशन जी आदि ने कुछ भी नहीं लिखा।

प्रश्न उठता है, वह गोरा पादरी कौन था? इसका पता हम न लगा सके। श्रीमान् भारतीय जी ने एक पुस्तक में ऐसा लिखा है:-.**"I visited a faqir down on the sand by the water edge, of whose learning and sanctity I had heard in the crowds of the bazaars….."**[2] अर्थात् मैंने गंगा तट पर उस साधु से भेंट की, जिसकी विद्वत्ता तथा श्रेष्ठाचरण के बारे में मैंने बाजारों की भीड़ में सुना था। भारतीय जी ने आगे तीन पंक्तियाँ और भी दी हैं।

भारतीय जी अपने इस अवतरण को पादरी टी.जे.स्काट की पुस्तक **"Missionary life in the villages of India"** के पृष्ठ १६२-१६३से उद्धृत बताते हैं। जो लिखा है सो ठीक है, परन्तु प्रमाण मूल ग्रन्थ से बहुत भिन्न है। प्रतीत होता है कि जिस पुस्तक से मान्य भारतीय जी ने इस अवतरण को लिया है, उसी में कुछ गड़बड़ हो गई होगी। सम्भव है, असावधानी से भारतीय जी से ही इसका कुछ अंश छूट गया हो।

यह भेंट गंगा तट पर कहाँ पर हुई? कब हुई? इससे यह भी पता नहीं चलता । राहुल जी ने लण्डन से जो स्रोत प्राप्त किये हैं, उससे सब कुछ सुस्पष्ट हो गया है और ऋषि जीवन से सम्बन्धित पर्याप्त और ठोस नई जानकारी मिलती है।

इस गोरे पादरी का नाम था श्री टी.जे. स्काट। यह भेंट काशी शास्त्रार्थ से एक वर्ष पूर्व २९ अक्तूबर १८६८ के दिन काकौड़ा के मेले पर हुई। पादरी जी की पुस्तक भारतीय जी ने नहीं देखी लगती। पुस्तक का शुद्ध नाम है:- **"Missionary life among the villages in India"** इसके पृष्ठ १६२ पर लिखा मिलता है:- **"In the afternoon I visited a faqir down on the sand by the water edge, of whose learning and sanctity I had heard in the crowds of the bazaars. I found him sitting in a little straw booth; and a splendid – looking fellow he was, with his herculean frame and massive finds, fine oval cranium and really benignant face. He was sitting al-**

most entirely naked, and entered at once into pleasant canversation. I found him to belong to a class of mendicants, who profess to have entirely abandoned the world, and are living in complete contemplation of the Deity. The conversation revealed in him a fine mind and well used in the ancient lore of the Hindus. He talked only Sanskrit, and our conversation was conducted through an interpreter."[3] इस सारगर्भित अवतरण का निचोड़ यह है कि बाद दोपहर मैंने गंगा तट पर रेती पर बैठे नंगे (कोपीनधारी) संन्यासी से भेंट की। उसके पाण्डित्य तथा पावन चरित्र की कीर्ति मैं बाजार की भारी भीड़ में सुन चुका था। मैंने उस महात्मा का घास-फूस की झौंपड़ी में आसन जमाये देखा। उसकी आकृति अत्यन्त भव्य थी, भीमकाय अतिशक्तिमान शरीर, अंग-अंग गठीले व विशाल, अण्डाकार कपाल तथा सौम्य मुखड़े को मैंने देखा। वह प्राय: करके नग्न बैठा था। शीघ्र प्रीतिपूर्वक संवाद आरम्भ हो गया। मैंने उसे भिक्षुक वर्ग से जुड़ा जाना जो संसार से विरक्त हो जाते हैं। वह अब भक्ति भजन में मस्त था। वार्तालाप से उसके गम्भीर ज्ञान, उर्वरा मस्तिष्क का परिचय मिला। वह हिन्दू साहित्य से सुपरिचित था। केवल संस्कृत में बातचीत संवाद करता था। द्विभाषिया विचारों के आदान-प्रदान में सहायक था। कहा जाता है कि ऋषि के शरीर का गठीले गात का सबसे पहले शब्द चित्र पादरी स्काट ने ही प्रस्तुत किया । हम भी इससे सहमत हैं।

श्री भारतीय जी ने अपने अवतरण में पादरी जी द्वारा ऋषि को नवविधान (New Testament) भेंट करना भी लिखा है। यह ठीक होगा, परन्तु इंग्लैण्ड से प्राप्त अवतरण में ऐसा नहीं मिलता। ऋषि इससे बहुत पहले पादरियों से शास्त्रार्थ करते हुए इसके प्रमाण देते रहे। हर कोई स्वीकार करेगा कि राहुल जी ने इस दस्तावेज की खोज करके बहुत बड़ा उपकार किया है।

महात्मा आनन्द स्वामी जी का देह-त्याग:- मैंने इन दिनों महात्मा जी के एक भक्त के मुख से सुना, "**देखो! उनका निधन अपनी पुत्री के घर पर हुआ। आर्य समाज ने अन्त समय उन्हें पूछा नहीं।**" पहले भी मैंने कई भक्तों को यह कहते सुना था। मैंने परोपकारी आदि में पहले भी लिखा था कि महात्मा जी पुत्री के घर पर मरने तो गये नहीं थे। यह तो एक आकस्मिक घटना थी। परिवार ने उनको सम्भाला, आर्य समाज ने उन्हें अन्त समय में पूछा नहीं- यह कथन मिथ्या है। मैं महात्मा जी के निधन तक उनसे जुड़ा रहा। इस कथन में आर्य समाज के साथ तो अन्याय है ही, महात्मा जी की भी इसमें शोभा नहीं। विस्तार से फिर लिखा जावेगा, अभी यही कहूँगा कि महात्मा जी के भक्तों को रणवीर ने सेवा का अवसर ही कब दिया? आर्य समाज सेवा से पीछे कब हटा? महात्माजी अन्तिम दिनों में भी भक्तों से घिरे रहते थे।

धूरी के बाबू पुरुषोत्तमलाल जी ने जालंधर यश की कोठी में उन्हें आग्रहपूर्वक कहा- आप मेरे साथ कार में धूरी चलें। मैं आपकी चारपाई से हिलूँगा नहीं। मैं बढ़िया इलाज करवाऊँगा। अपने व्यापार कारखाने की चिन्ता छोड़कर आपकी सेवा करूँगा। जब तक आपकी अरथी मेरे घर से नहीं निकलेगी, मैं आपके चरणों में रहूँगा। यश की कोठी पर मेरे साथ बात करते हुए महात्मा जी ने बाबू पुरुषोत्तमलाल जी के साथ हुए संवाद की पुष्टि की। और भी अनेक भक्तों का ऐसा आग्रह रहा। पं. देवप्रकाश जी की स्वामी सर्वानन्द जी ने जो सेवा की, वह कौन नहीं जानता? क्या स्वामी जी आनन्द स्वामी महाराज को ऐसे ही छोड़ देते? महात्मा जी पर अपनी पुस्तक में मैंने खुलकर इस विषय में लिखा है। आर्य समाज की इस विषय में अपकीर्ति का कारण रणवीर है और डी.ए.वी. के कर्णधार हैं। रणवीर ने सन् १९९३ में उनके ओपरेशन के समय दक्षिण के आर्यों, पं. नरेन्द्र जी की सेवा पर एक शब्द नहीं लिखा। प्राचार्य भगवानदास जी के दो पुत्र मेरे साथ उनका पता करने तब हैदराबाद गये। रणवीर को इसका पता था। उसने पं. नरेन्द्र जी व दक्षिण के आर्यों की सेवा व श्रद्धा का संकेत तक नहीं दिया तो हमारे जाने के उल्लेख का तो फिर प्रश्न ही नहीं उठता। क्या हैदराबाद के आर्य इतने निष्ठुर हो गये कि तब महात्मा जी के पास फटके तक नहीं? बाबू पुरुषोत्तमदास ने तभी महात्मा जी से कहा था कि चलो मेरे साथ। इससे आर्य समाज पर कलङ्क लगेगा। महात्मा जी ने उन्हें कहा, "**एक बार इन्हें अपनी इच्छा पूरी कर लेने दो। यह किसी वैद्य को दिखाना चाहते हैं।**"

अघ्न्या = गा :- बड़बोले नेताओं की कृपा से बिहार चुनाव का वातावरण प्रदूषित हो चुका है। गो-मांस भक्षण पर लज्जाजनक विवाद छिड़ गया है। रघुवंशप्रसाद सिंह ने पुराणों के साथ-साथ वेद को भी इस विवाद में घसीट लिया। ऋषि-मुनियों पर वार होने लगे हैं । किसी नेता ने यह तर्क नहीं दिया कि वेद में तो गो का पर्याय 'अघ्न्या' है। इसका तो अर्थ ही

यही है-जिसकी हत्या न हो। विश्व हिन्दू परिषद के एक प्रवक्ता ने पुराणों की वकालत में भावना व आस्था की दुहाई तो दी, परन्तु तर्क, प्रमाण व युक्ति कोई दी ही नहीं। वेद के बारे में एक शब्द नहीं कहा। इससे स्पष्ट है कि हिन्दू समाज वेद से कट चुका है। आर्य समाज पूरी शक्ति से वेद के प्रचार व प्रतिष्ठा के लिए समर्पित होगा तो कुछ बनेगा।

जिन्हें आर्य समाज भूल गया है :- रुड़की क्षेत्र के एक भाई 'हिन्दी पत्रकारिता को आर्य समाज की देन' पर पी-एच.डी. कर रहे हैं। परोपकारी के इस प्रेमी ने कहा है कि आर्य समाज में सब चार छ: रटे-रटाये नाम उगल देते हैं। तड़प-झड़प में नई-नई सामग्री, नये-नये तथ्य व नाम पढ़ने को मिलते हैं। मेरा कुछ मार्गदर्शन करें। हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक मंगलाप्रसाद पारितोषिक आर्यों ने प्राप्त किये। एक ही घर में दो को यह पुरस्कार मिला। पं. विश्वनाथ, स्वामी वेदानन्दजी, पं. चमूपति, पं. भीमसेन सिद्धहस्त आर्य सम्पादक थे। यह कौन चर्चा करता है?

दूर दक्षिण में तेलङ्गाना आन्ध्र का सबसे पहला हिन्दी पत्र 'वैदिक संदेश' था। यह विश्वविद्यालयों में प्रमाणित हो चुका है। इसके सम्पादक पं. त्रिलोकचन्द जी शास्त्री की कई बार परोपकारी चर्चा कर चुका है। कौन आर्य समाज में उनका नाम लेता है? पं. रामदेव शास्त्री तथा श्रीयुत् कृष्णदत्त दक्षिण के आर्य पत्रों के सम्पादक रहे। अनेक आर्य पत्रों के सम्पादक भारतेन्द्रनाथ जी को 'आर्य समाज की हिन्दी को देन' पर लिखने वालों ने कभी याद किया? श्रीमती राकेश रानी जी के जीवन की साँझ है। देश की इस हिन्दी पत्रकार पर सर्वाधिक अभियोग चलाये गये-वह फिर भी न डरीं। इस तथ्य का आर्य समाज में किसने प्रचार किया? पं. पद्मसिंह शर्मा परोपकारी के आरम्भिक काल के सम्पादक थे। पूज्य पं. शान्तिप्रकाश जी, श्रद्धेय गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, डॉ. हरिशंकर शर्मा, डॉ. विद्याभूषण विभु, श्री विश्वप्रकाश बड़े सफल, सिद्धहस्त व कुशल सम्पादक थे। मैंने तरसती प्यासी आँखों से ऐसे लेखों में उनका नाम खोजने का यत्न किया, परन्तु कुछ मिला नहीं। निराशा ही पल्ले पड़ी। शेष फिर।

बैल मुसलमानों का:- बिहार के आर्य विद्वान् कवि सत्यदेवप्रसाद जी का प्रश्न है कि पृथ्वी को धारण कौन करता है? इस प्रश्न के उत्तर में ऋषि ने सहस्र फन वाले सर्प (शेष) और मुसलमानों के 'बैल के सींग पर' - की मान्यता की चर्चा की है। श्री सत्यदेव जी ने 'बैल से सम्बंधित मान्यता क्या है?' इस पर प्रकाश डालने को कहा है। आज तो नहीं, फिर कभी हदीसों के प्रमाण से इस विषय पर विस्तार से लिखा जायेगा।

मान्यता यह है कि मुसलमान मानते हैं कि भूमि बैल के सींग पर स्थित है। जब बैल का एक सींग थक जाता है तो वह बदल कर दूसरे सींग पर धरती को उठाता है तब भूकम्प आता है। मेरा जन्म मुस्लिम बहुल ग्राम में हुआ था। बाल्यकाल में अपने ग्राम के छोटे-बड़े मुसलमानों के मुख से यह फिलसफी मैंने सुनी। डॉ. गुलाम जैलानी के साहित्य में ऐसी कई रोचक हदीसें उद्धृत की गई हैं।

इमाम बुखारी का स्वागत योग्य कथन:- दिल्ली के इमाम बुखारी ने गो-भक्तों की भावनाओं का सन्मान करते हुए देशभर में गो-हत्या निषेध कानून बनाने का समर्थन किया है। यह वक्तव्य स्वागत योग्य है। सर सैयद अहमद खाँ से लेकर ख्वाजा हसन निजामी भी यही कुछ कहते रहे हैं। भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनि जी की पुस्तक 'गो माता विश्व की प्राण दाता' में ऐसे कई प्रमाण दिये गये हैं। इस्लाम में गो मांस भक्षण कोई अनिवार्य कर्त्तव्य कर्म नहीं, जैसा कि नमाज पढ़ना है। सर सैयद "**गो-वध के लिए हठ को मात्र जहालत (अज्ञान) मानते थे।**[४]" फिर इसी ग्रन्थ में एक बार बकरईद के अवसर पर गो-वध के लिये लाई गाय कालेज के छात्रों से छीनकर गो हत्या न होने दी। यह समाचार सुनकर वह बहुत रुष्ट हुए।[५]

आँजहानी श्रद्धाराम:- नेहरू जी के निधन पर किसी मुसलमान ने उनके लिए जन्नत की दुआ माँगी। झट से फतवा आ गया कि यदि वह मरने से पहले इस्लाम स्वीकर कर लेते तो मरहूम (जिस पर अल्लाह की कृपा हो) होने से बहिश्त में जा सकते थे। गाँधी जी की उर्दू में अनूदित आत्मकथा में वर्णित नामों में प्रत्येक पारसी, हिन्दू व ईसाई सिख दिवंगत नेता कि जिसे गाँधी जी ने Late (स्वर्गीय) लिखा, पुस्तक के अनुवादक डॉ. आबिद हुसैन ने उन सबको आँजहानी (दोजख वासी) लिख कर इस्लामी मान्यता का झण्डा फहरा दिया।

आश्चर्य का विषय है कि पं. श्रद्धाराम द्वारा लिखित पुस्तकों के विज्ञापन में उसके सनातन धर्मी भक्तों ने पं. श्रद्धाराम जी को भी आँजहानी (नरकवासी) ही लिखा व माना है। यह पढ़कर मुझे हिन्दू सनातन संस्कृति पर अश्रुपात करना पड़ा।[६] दिन-रात आर्य समाज को कोसना जो सनातन संस्कृति मानते हैं, उनकी सोच बहुत निराली व दंग करने वाली है।

दिल्ली का वह आर्य संन्यासी:- देश भर के आर्यजन पूछते हैं कि परोपकारी में आर्य समाज की विस्तृत विभूतियों,

तप:पूतों को खोज-खोज कर खोद-खोद कर कहाँ से लाते हो? पाठकों की माँग पर आज भी दो ऐसे धर्मवीरों पर कुछ लिखा जाता है। ऋषि का पत्र व्यवहार आने वाला है। इसके छपते उसमें वर्णित आर्यों पर लिखा जावेगा।

दिल्ली में पंचकूईयाँ रोड पर कोने के एक आश्रम में स्वामी रामानन्द जी रहते थे। मैंने कई बार उनके दर्शन किये। दिल्ली वाले उनका नाम तक नहीं जानते। उन्होंने जाति रक्षा, नारी रक्षा व शुद्धि का ऐतिहासिक कार्य किया। वे कैसे सेवा करते थे? यह लेख में नहीं बताऊँगा। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की शब्दावली में वह एक मौनी धर्म जाति रक्षक थे। परम पराक्रमी थे। चूना मण्डी पहाड़गंज समाज के पुरोहित पं. भगवानदास जी उन्हीं की देन थे। वे पुरोहित कैसे बने? स्वामी जी उनको कहाँ से लाये। यह भी एक इतिहास है।

पं. शान्तिप्रकाश जी का एक धर्मवीर :- परोपकारी में पं. शान्तिप्रकाश जी के जन्म स्थान के महाशय मूलशंकर (पं. शान्तिप्रकाश जी के एक निर्माता) पर जो लिखा, उसे पढ़कर पण्डित जी के एक परमोत्साही धर्मवीर के चार पोस्ट कार्ड मिले हैं। यह सज्जन हमारे पूज्य महाशय मूलशंकर जी के एक लाड़ले आर्यवीर व उनके साथ समाज के मन्त्री भी रहे हैं। भले व्यक्ति ने अपना व अपने नगर का नाम ही नहीं लिखा। परोपकारी का यह पाठक तड़प-झड़प में आदर्श आर्योपदेशक मूलशंकर जी पर कुछ पढ़कर फड़क उठा। यह सज्जन पश्चिमी पंजाब में आर्य समाज के मन्त्री थे। इनके वहाँ सनातन धर्म का उत्सव था। ये जानते थे कि उत्सव में ऋषि दयानन्द जी को भरपेट गालियाँ दी जायेंगी। इसके बिना सनातन धर्म का क्या प्रचार?

यह सन् १९४३ की घटना है। एक भजनीक ने अपना जोशीला भाषण देते हुए ऋषि दयानन्द जी के बारे में कुछ ऐसे शब्द कहे जो यहाँ लिखे नहीं जा सकते। पं. शान्तिप्रकाश जी के इस निडर परमोत्साही आर्य युवक को जोश आ गया। इसने महाशय मूलशंकर का इतिहास दोहराया। स्टेज पर चढ़कर पं. लेखराम के रणबाँकुरे ने उस भजनीक को व सुनने वालों को ललकारा। भरी सभा में उस भजनीक को क्षमा माँगनी पड़ी। सब सनातनियों को भी उसे फटकार लगानी पड़ी। अब जब आर्य समाजी निष्कलङ्क दयानन्द तथा इतिहास की साक्षी जैसी पुस्तकों को न पढ़ें और न प्रचारित करें तो फिर ऐसा इतिहास कैसे दोहराया जा सकता है?

अंग्रेज भक्ति व दासता को ही सनातन धर्म मान लिया :- आज आर्य समाज के गौरवपूर्ण इतिहास के एक अध्याय का अनावरण किया जाता है। कुछ पत्रों में सत्यार्थप्रकाश पर बाबा आलाराम के अभियोग की बार-बार चर्चा की जाती रही है। बाबा आलाराम को समझने के लिये दो बातें नहीं भूलनी चाहिये। इस बाबा ने कभी आर्य समाज के प्रचार की धूम मचा रखी थी। फिर क्या खिचड़ी पकी, यह शोध का विषय है कि बाबा आलाराम घोर ऋषि निन्दक, आर्य समाज द्वेषी व अंग्रेज भक्त बन गया।

अंग्रेज भक्ति व दासता उसकी दृष्टि में सनातन हिन्दू धर्म का मूल सिद्धान्त था। ऋषि दयानन्द के नाम के साथ अब आलाराम जी संन्यासी कोई आदर सूचक शब्द लगाना भी सनातन धर्म का अपमान मानता था। 'दयानन्द मिथ्यात्वप्रकाश' पुस्तक माला के मुखपृष्ठ के ये शब्द स्मरणीय हैं, जिसके पढ़ने से सर्वसाधारण मनुष्य मात्र को दयानन्द का अभ्यान्तरिक अभिप्राय बोध हो सकता है- **''राज भक्ति में दृढ़ता तथा गवर्नमेन्ट के पूरे शुभचिन्तक बन सकते है।''**

इसी पुस्तकमाला के तीसरे भाग में फिर आर्यों के विद्रोही होने का शोर मचाया है। सनातनी हिन्दुओं को ग्राम-ग्राम में पंचायतें करके अंग्रेज सरकार द्रोही आर्यों के बहिष्कार के लिए प्रेरित किया गया है। सनातनियों को आलाराम सागर ने कड़ा आदेश दिया कि विद्रोही आर्यों को फैलने से रोका जावे।

शेष फिर।

सन्दर्भ

१. Life of Dayanand Saraswati by Harbilas Page 62

२. द्रष्टव्य महर्षि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी, पृष्ठ १५४

३. Missionary Life among the Villages in India, Page 162.

४. द्रष्टव्य सर सैयद की जीवनी 'हयाते जावेद', पृष्ठ ७८३२ वही पृष्ठ ७८३-७८४

५. द्रष्टव्य पं. श्रद्धाराम जी का ग्रन्थ 'असूले मजाहब', प्रकाशक 'मित्र विलास' लाहौर। इस ग्रन्थ के पृष्ठ ४५४ पर 'धर्म रक्षा' पुस्तक के विज्ञापन में बड़ी श्रद्धा भक्ति से पण्डित जी को 'आँजहानी' [नरकवासी] लिखा है। आर्य समाज यहाँ क्या करे?

६. यह पहला भाग सन् १८९६ में कराची से छपा था।

७. द्रष्टव्य दयानन्द मिथ्यात्व प्रकाश भाग तीसरा, भूमिका पृष्ठ एक।

- **वेद सदन, अबोहर , पंजाब- १५२११६**

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ जून, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। -संपादक

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

आर्यों का महाकुम्भ : ऋषि-मेला अजमेर
(२०,२१ व २२ नवम्बर २०१५)

- श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य

उन्नीसवीं शताब्दी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के जन्म, उनके योगाभ्यास विद्याध्ययन, वेदप्रचार एवं समाज-सुधार तथा अन्त में उनके बलिदान की शताब्दी है। वर्ष सन् १८७५ में ऋषिवर ने आर्य समाज की स्थापना की और कुछ ही वर्षों में देश-विदेश में बड़ी संख्या में आर्य समाजें स्थापित हो गयीं। मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना के समय जो नियम बने थे, उनका लाहौर में आर्य समाज की स्थापना के पश्चात् वर्गीकरण कर दिया गया। दस बिन्दुओं को तो आर्य समाज के नियम तथा शेष को उपनियम (संगठन विषयक) में निरूपित कर दिया, परन्तु महर्षि जी इतने भर से सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने स्वलिखित ग्रन्थों, वेद भाष्यों एवं शास्त्रार्थ आदि के प्रकाशनार्थ वैदिक यंत्रालय (प्रेस) भी स्थापित किया और फरवरी १८८३ में ''परोपकारिणी सभा'' के नाम से अपनी उत्तराधिकारिणी सभा भी स्थापित की। उदयपुर नरेश महाराजाधिराज श्री सज्जन सिंह इस सभा के अध्यक्ष बनाये गये तथा उदयपुर राज्य की महद्राज सभा द्वारा परोपकारिणी सभा का पंजीकरण किया गया। ऋषिवर द्वारा स्थापित उस सभा का कार्यालय वर्ष १८९३ ई. से अजमेर (राजस्थान) में है। यहाँ पर केसरगंज स्थित कार्यालय एवं पुष्कर मार्ग पर स्थित ऋषि उद्यान से सभा के कार्य-कलाप एवं गतिविधियों का सुसंचालन होता है।

परोपकारिणी सभा के महर्षि ने तीन लक्ष्य रखे-

१. वेद-वेदाङ्गादि शास्त्रों का प्रचार।

२. वेदोक्त धर्म का उपदेश और शिक्षा।

३. आर्यावर्त्तीय और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा का कार्य।

ये सारे कार्य तो सभा अपनी सामर्थ्यानुसार वर्षभर करती रहती है और निरन्तरता के आधार पर करती है। इनके अतिरिक्त सभा प्रतिवर्ष दीपावली के ८-१० दिन पश्चात् वेद-प्रचारार्थ एक बृहद् आयोजन ऋषि-उद्यान में करती है। आर्यावर्त्त की विशुद्ध वैदिक संस्कृति की छटा इस आयोजन में विविधता के साथ देखने को मिलती है। बड़ी संख्या में देश भर से लोगों की सहभागिता इस कार्यक्रम में बढ़ती ही जा रही है और कई दशकों से अब यह कार्यक्रम भारत भर में ऋषि-मेले के नाम से विख्यात् है। राष्ट्रीय स्तर का यह वैसा ही कार्यक्रम है, जैसा अब से पचास वर्ष पूर्व गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव हुआ करता था। ऋषि-मेले में आने के लिए देश भर से आर्य-जन उत्सुक रहते हैं और यात्रा के कष्ट उठाकर भी ऋषि-मेले की शोभा को बढ़ाते हैं।

अखिल भारतीय स्तर पर ऋषि-मेले को जो लोकप्रियता, भव्यता और गरिमा प्राप्त हुई है, उसकी पृष्ठभूमि में सभा के पदाधिकारियों की सूझबूझ पूर्ण रीति-नीति और अनवरत प्रयास हैं। अपने जीवन का पूरा वसन्त जिन्होंने परोपकारिणी सभा की उन्नति और विकास में लगाया-खपाया, ऐसे **श्री डॉ. धर्मवीर जी** (सम्प्रति सभा के प्रधान और पूर्व में दशकों तक मन्त्री)दिन-रात सभा के कार्यों को गति देने में सर्वात्मना लगे रहते हैं। देशभर के आर्यजनों से सम्पर्क एवं संवाद बनाये रखने के उनके अद्भुत कौशल से ही सभा को आर्थिक सहयोग के साथ नैतिक बल भी मिलता है और स्थायित्व भी मिलता है। उनके वैदुष्य एवं पाण्डित्य का लाभ सभा को मिलता ही है। सभा के उत्साही मन्त्री **श्री ओममुनि जी** का सभी कार्यों में आदरणीय **डॉ. श्री धर्मवीर जी** को सहयोग रहता है। सभा के सुयोग्य कोषाध्यक्ष **श्री सुभाष नवाल जी,** सभा के भवनों की मरम्मत, रख-रखाव एवं नये भवनों के निर्माण का कार्य अति उत्तम ढंग से कराते हुए सभा के वित्तीय मामलों को बड़ी पारदर्शिता के साथ सम्भालते हैं। इस वर्ष संलग्न स्नानागार वाले २० कक्ष और नये बनकर तैयार हो गए हैं। आर्य विद्वान्, लेखक और वक्ता **श्री डॉ. रामप्रकाश जी** पूर्व सांसद (राज्य सभा) की सांसद-निधि से प्राप्त दस लाख रुपयों की सहायता से २८'×४५' आकार का सुन्दर वाचनालय भवन बनकर तैयार हो गया हैं। ऋषि उद्यान में

स्थित योग भवन, भोजनशाला, सरस्वती भवन, स्वामी ओमानन्द आश्रम, लेखराम अतिथिशाला, भव्य अनुसन्धान भवन (जिनमें शताधिक कक्ष हैं) आदि उत्तम आवास व्यवस्था का भी ऋषि-मेले की सफलता में योगदान है।

वेदोक्त धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए सभा के पास समर्पित विद्वानों की टीम है। स्वयं **डॉ. धर्मवीर जी** भारत भर की आर्य समाजों और गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय सहित गुरुकुलों में प्रचारार्थ पूरे वर्ष जाते रहते हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में प्रो. **डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु,** वैदिक वाङ् मय के प्रकाण्ड पण्डित **प्रो. डॉ. वेदपाल जी, आचार्य सोमदेव उपाध्याय, सत्येन्द्र सिंह आर्य, आचार्य कर्मवीर जी** आदि प्रचार कार्य में लगे रहते हैं। वैदिक विचारधारा का पोषण करने वाले प्रवचन आस्था भजन चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित होते हैं और प्रवचनकर्त्ता हैं- **श्री डॉ. धर्मवीर जी, स्वामी विष्वङ् जी परिव्राजक एवं आचार्य सत्यजित् जी।** ऋषि उद्यान की भव्य यज्ञशाला में भी पिछले लगभग तीन दशकों से प्रात: एवं सायंकाल (दोनों समय) यज्ञ एवं वेद प्रवचन का कार्य निर्बाध गति से चल रहा है।

विभिन्न प्रान्तों के आर्यजनों के साथ सभा का सम्पर्क विभिन्न शिविरों में आने वाले शिविरार्थियों के माध्यम से भी होता है।

सभा द्वारा ऋषि उद्यान में वर्ष में दो योग साधना शिविर (एक जून में और एक अक्टूबर में) आयोजित किये जाते हैं। इस वर्ष जून में आयोजित योग साधना शिविर में शिविरार्थियों की संख्या २३८ थी, इसी से शिविर की उपयोगिता एवं लोकप्रियता का पता लगता है। बहुत से शिविरार्थी शिविर की अवधि ८ दिन से बढ़ाकर १५ दिन करने का आग्रह करते हैं। योग साधना शिविरों के अतिरिक्त एक आर्य वीर दल का शिविर तथा एक आर्य वीरांगना दल का शिविर भी अलग-अलग अवधियों में लगाया जाता है। इन आर्यवीर और आर्य वीरांगना शिविरों में राजस्थान प्रान्त से एवं हरियाणा, दिल्ली सहित अन्य प्रान्तों से भी सहभागी आते हैं। किसी शिविर में शिविरार्थियों की संख्या एक सौ से कम तो नहीं ही होती है। योग साधना बड़ा जटिल एवं सूक्ष्म विषय है, तथापि श्रद्धेय **स्वामी विष्वङ्जी , आचार्य सत्यजित् जी** अपने सतत् स्वाध्याय, स्वाभाविक रुचि एवं अभ्यास के कारण इन शिविरों का बड़ी सफलता से संचालन करते हैं। **आचार्य सोमदेव जी उपाध्याय, आचार्य कर्मवीर जी** भी सत्रों का संचालन करते हैं। इन शिविरों में योगदर्शन की बहुत सहज, स्वाभाविक और बुद्धिगम्य व्याख्या करते हैं। आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् और वैदिक वाङ्मय के प्रकण्ड पण्डित **श्री डॉ. धर्मवीर जी** को वेद, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद् आदि ग्रन्थों के बड़ी संख्या में प्रमाण उपस्थित हैं। उनके वैदुष्य का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस वर्ष नई दिल्ली की एक बड़ी आर्य समाज ने अपने यहाँ योग-साधना शिविर संचालित करने के लिए आग्रहपूर्वक उन्हें बुलाया और उन्होंने अकेले ही एक सप्ताह के उस शिविर का अत्यन्त सफलता से संचालन किया। सहयोगी के रूप में कोई भी अन्य आचार्य या विद्वान् वहाँ नहीं थे।

शिविरों का आयोजन करने में ऋषि उद्यान में सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल का बहुत योगदान रहता है। शिविरार्थियों के आवास एवं भोजन की पूरी व्यवस्था गुरुकुल के आचार्य जी के मार्ग निर्देशन में ब्रह्मचारी गण सम्भालते हैं। सभा के अधिकारियों का उन पर वरद्हस्त रहता है। शिविरों की सफलता सभी के सहयोग का सुफल होता है।

ऋषि उद्यान में ही एक उत्तम गोशाला चल रही है, जिसमें देशी नस्ल की ५० के लगभग गाय, बछड़ियाँ,बछड़े तथा साण्ड आदि हैं। सभी पशु इतने स्वस्थ और सुन्दर हैं कि राजस्थान में पशु मेलों में कई बार पुरस्कृत होते हैं। गोशाला का दूध ऋषि उद्यान में निवास करने वाले आचार्यगणों, ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों एवं विद्वानों को नि:शुल्क उपलब्ध कराया जाता है। यदि शिविर न भी चल रहे हों तो लगभग अस्सी-सौ लोगों का प्रातराश एवं दोनों समय का भोजन तो भोजनालय में बनता ही है। विद्वानों का आना-जाना भी यहाँ प्राय: बना रहता है। गुरुकुल में भी लगभग ४० ब्रह्मचारी दर्शन, उपनिषद्, व्याकरण एवं संस्कृत का अध्ययन कर रहे हैं। कुछ वानप्रस्थी एवं संन्यासीगण भी ऋषि उद्यान में निवास करते हैं और कुछ अस्थायी रूप से आते-जाते रहते हैं। ये सब सभा के, ऋषि

के मिशन के प्रचारक (एम्बैसेडर) हैं। गुरुकुल, गोशाला, अतिथियज्ञ के लिए परोपकारिणी सभा को दानी महानुभावों से धन प्राप्त होता है, सभा उन उद्देश्यों के लिए पूर्ण ईमानदारी के साथ उसे खर्च करती है। इतने बड़े स्तर पर यह काम तभी सम्भव है। दानी महानुभाव निश्चिन्त होकर परोपकारिणी सभा को उदारतापूर्वक एवं कृपा पूर्वक सहयोग करते रहें, जिससे यह सारस्वत अनुष्ठान इसी प्रकार चलता रहे।

वास्तव में ऋषि-मेले की तैयारी प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से वर्ष भर ही चलती रहती है। इस वर्ष जून-जुलाई (२१-६-२०१५ से ९-७-२०१५ की अवधि) में सभा ने प्रधान **श्री डॉ. धर्मवीर जी** के नेतृत्व में गुजरात वेद-प्रचार यात्रा का आयोजन किया। प्रचार यात्रा में सभा मन्त्री **श्री ओममुनि जी, आचार्य सोमदेव जी, आचार्य कर्मवीर जी**, गुरुकुल के सात-आठ ब्रह्मचारियों सहित लगभग ३० लोग थे। एक मिनी बस सहित ४ वाहन थे। महाराष्ट्र में नासिक, पुणे, मुम्बई होते हुए यह वेद-प्रचार यात्रा गुजरात में उन-उन स्थानों पर गई, जहाँ-जहाँ ऋषिवर गये थे। वहाँ पर आर्यजनों को सभा द्वारा किये जा रहे कार्यों से अवगत कराया। स्थान-स्थान पर भजन, प्रवचन और उपदेश किये। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ **प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, भजनोपदेशक श्री पं. भूपेन्द्र सिंह** पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहे। प्रत्येक स्थान पर देवियों को यह देखकर अच्छा लगा कि इस प्रचार यात्रा के दल में महिला प्रतिनिधि के रूप में **श्री डॉ. धर्मवीर जी की सहधर्मिणी श्रीमती ज्योत्स्ना जी** भी उपस्थित रहीं। सभा ने इस कार्यक्रम की १७-१८ दिन की अवधि में जहाँ हजारों रुपयों का वैदिक साहित्य नि:शुल्क वितरित किया, वहीं लगभग तीन लाख रुपये मूल्य के साहित्य की नकद बिक्री हुई। सभा राजस्थान, महाराष्ट्र एवं गुजरात में जाकर आर्यजनों से उनके नगरों में मिली तथा प्रचार-कार्य पर चर्चा की। सितम्बर मास में पुन: सभा की ओर से जमानी आश्रम (म.प्र.) में एक भव्य शोभा यात्रा, बृहद् यज्ञ एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम रखा गया, जिसका संचालन आदरणीय **आचार्य सोमदेव जी, कर्मवीर जी** एवं **सत्यप्रिय जी** ने किया। अगस्त-सितम्बर मास में चार सप्ताह तक वेद प्रचार का कार्य औरंगाबाद, परली-बैजनाथ, लातूर और शोलापुर (महाराष्ट्र) में **श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य** ने किया। अक्टूबर २०१५ में एक सप्ताह के प्रचार कार्यक्रम पर सभा की ओर से राजस्थान प्रान्त की आर्य समाजों में **श्री पं. रामनिवास गुणग्राहक** गये। यह सब ऋषि मेले की परोक्ष तैयारी ही है।

महर्षि द्वारा स्थापित वैदिक यंत्रालय भी अजमेर में ही है और सभा के स्वामित्व का संस्थान है, जिसमें वैदिक साहित्य के प्रकाशन का कार्य वर्षभर चलता रहता है। सभा का मुख-पत्र परोपकारी पाक्षिक सभा की गतिविधियों की जानकारी आर्य जगत् को विस्तार से उपलब्ध कराता रहता है। उच्चकोटि के, राष्ट्रीय महत्त्व के एवं सामयिक सम्पादकीय लेखों के अतिरिक्त, जिज्ञासा समाधान, तड़प-झड़प एवं सैद्धान्तिक लेख इसमें छपते हैं। अब से तीन दशक पूर्व जब **डॉ. धर्मवीर जी** ने यह पत्रिका सम्भाली थी, तब इसकी प्रसार-संख्या ४००-५०० थी जो अब बढ़कर लगभग १५००० हो गयी है। ऋषि-मेले की जानकारी परोपकारी पत्रिका के माध्यम से कई मास पूर्व से ही आर्यजनों को दी जाने लगती है। मेले में सम्मिलित होने वाले आगन्तुकों एवं सभा के बीच में पत्रिका बहुत बड़ा सेतु है। ऋषि मेले की तैयारी में परोपकारी पत्रिका का बहुत योगदान रहता है। महर्षि दयानन्द वचनामृत का रसास्वादन भी पाठक प्रत्येक अंक में करते हैं। ऋषि मेले के अवसर पर भारत भर से जो लोग आते हैं, वे यज्ञ, भजन, प्रवचन, वेद-गोष्ठी आदि में शामिल होते ही हैं, उन्हें इस अवसर पर ऋषि-उद्यान के प्रत्येक कार्यक्रम एवं सभा के प्रत्येक कार्य-कलाप में सहज स्वाभाविकता एवं शालीनता का अनुभव होता है। वास्तव में इस सारी सफलता के पीछे माननीय **डॉ. धर्मवीर जी** की ऊहा, वैदिक वाङ्मय पर उनका असाधारण अधिकार, महर्षि के मिशन के प्रति प्रतिबद्धता एवं संस्था को समग्र रूप में प्रगति के पथ पर ले चलने की सूक्ष्म सूझ ही मुख्य कारण है। विद्वानों, सहयोगियों, शुभचिन्तकों एवं आर्य जनों को ऋषि-मिशन के काम में साथ ले चलने की सभा के प्रधान माननीय **डॉ. धर्मवीर जी** में अद्भुत क्षमता है, इसीलिए ऋषि-उद्यान, ऋषि-मेले एवं समूची परोपकारिणी सभा में हम आज जो कुछ भी अच्छा या भव्य देखते हैं, वह उन्हीं के त्याग, तप और सद्प्रयासों का सुफल है।

शेष भाग अगले अंक में.....

आत्म-चिन्तन और मनन

- रमेश मुनि

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।।
क्रोधाद् भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।
- (गीता २-६२,६३)

शराबी आदमी शराब पी कर गिरता है। वह खड़ा होना, ठीक ढंग से चलना चाहता है, किन्तु नहीं हो पाता, ठीक ढंग से नहीं चल पाता। इस अवस्था में वह आदमी नहीं रह जाता- यह उसकी करुणाजनक स्थिति होती है। वह शरीर से उत्तम है, सुन्दर कपड़े पहने हुए है, किन्तु मदिरा के मस्तिष्क में पहुँच जाने के कारण बुद्धि बिगड़ जाती है, बुद्धि में अन्तर आ जाता है। इसी से सन्तुलन बिगड़ जाता है, जिसके कारण वह चलने के लिए उठता है, किन्तु गिर पड़ता है, फिर उठता है फिर गिर पड़ता है, इसी प्रकार की स्थिति बनी रहती है। संसार में हम सब की भी ऐसी स्थिति प्राय: बनी रहती है। सांसारिक विषयों की इच्छाओं के प्रभाव के कारण सभी का सन्तुलन बिगड़ा रहता है, उठना-गिरना, उठना-गिरना सभी में होता रहता है, सभी में ऐसी स्थिति चलती रहती है। ऐसी स्थिति के कारण ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि दोष प्रबल हो जाते हैं, जिस कारण व्यक्ति छल, कपट, ऊँच, नीच करता रहता है। सदा एक बुद्धि को बनाए नहीं रख सकता, जिससे शराबी की तरह पगलाया रहता है। ईश्वर और आत्माएँ नित्य हैं, जबकि संसार अनित्य है, सदा रहने वाला नहीं है। इस तत्त्व को वह या तो जानता ही नहीं, यदि जानता भी है तो इसे मानता नहीं है और विषयों के प्रभाव के कारण सांसारिक पदार्थों को नित्य मान कर अपना व्यवहार करता है।

ईश्वर ने मानव के लिए अत्युत्तम पदार्थ बुद्धि बनाई है, किन्तु अपने कर्मों या व्यवहार के कारण इससे वञ्चित हो जाता है। मानवपन तब सार्थक होता है, जब वास्तविकता को समझ कर आचरण ठीक कर समाधिनिष्ठ होगा, जिससे बुद्धि सात्विक होगी और शराबी के तरह का भाव समाप्त हो जाएगा। शराबी यदि अपने व्यवहार को ठीक नहीं करता तो उसका जीवन दु:खमय रहता है, इसी प्रकार सामान्य मानव भी विषयों के नशे में रहेगा तो जीवन दु:खमय बना रहेगा। जिस प्रकार शराबी की उस अवस्था को देख हम उसे दया का पात्र मानते हैं, इसी प्रकार अपने को भी दया का पात्र मानना चाहिए। मानव जीवन का लक्ष्य यह है कि विशेष उपलब्धि से अपने को वञ्चित देखकर हमें ग्लानि अनुभव करनी चाहिए और दोष को दूर करना चाहिए। शराबी के मन में खड़े होने, ठीक प्रकार से चलने का प्रयास करके अपने आपको अच्छा दिखाने की भावना होती है। वह प्रयास से अपने सम्मान को सुरक्षित करना चाहता है, किन्तु बुद्धि बिगड़ने से नहीं कर पाता। यही स्थिति हमारी भी है। हम दिखाना चाहते हैं कि मैं जो कर रहे हैं, ठीक कर रहे हैं, लेकिन वह काम गलत होता है।

योगी विवेकी जानता है कि आम आदमी को ऐसी हालत में देख कर ईश्वर हमें उस शराबी की तरह का समझता है। इस अवस्था को उत्पन्न करने का मूल कारण हमारी इच्छाएँ हैं (योगदर्शन के अनुसार वृत्तियाँ)। इन्हें हटाने का प्रयास करें। यदि हम अपनी इच्छा को रोक लेते हैं तो वृत्तियाँ स्वयं रुक जाएँगी, इच्छा बढ़ने से चञ्चलता के कारण वृत्तियाँ, प्रवृत्तियाँ बढ़ जाएँगी, जीवन दु:खमय हो जाएगा।

न्याय दर्शन सूत्र (४-२-२)- **''दोष निमित्तं रूपादयो विषया: संकल्पकृता:''** अर्थात् मिथ्या इच्छाओं से उत्पन्न रूप, रस आदि पाँच विषय राग, द्वेष आदि दोषों को उत्पन्न करते हैं। मिथ्या इच्छाओं को समाप्त करके रूपादि विषयों के प्रति आसक्ति को दूर करके शराबी के व्यवहार से बच सकते हैं।

आनन्दमयोऽभ्यासात् (वेदान्त १-१-१२)

परमात्मा आनन्द स्वरूप है। अर्न्तदृष्टि से परमात्मा का अभ्यास करने से, यम-नियमों का अनुष्ठान, पालन करने से ईश्वर की अनुभूति होती है।

जब इच्छा के साथ भिन्न-भिन्न विषय जुड़ते जाते हैं तो कामनाएँ जोर मारने लगती हैं। जब इच्छा शरीर को प्राप्त करने की हो तो यह काम कहलाती है। इसमें यदि दूसरा व्यक्ति प्रतियोगी है और समान स्तर का है तो उससे ईर्ष्या। यदि वह बाधा करता है तो द्वेष और यदि प्रतियोगी निर्बल हो तो उसे मारने या नष्ट करने की प्रवृत्ति बन जाया करती

है।

इच्छा यदि अनुकूल विषय से जुड़ गई तो राग बन जाती है, वही अनुभूति बढ़ने से प्रीति या प्रेम कहलाती है। इच्छाएँ लगातार बढ़ती जाएँगी। यदि मिल गया तो फिर मिले। यदि इच्छा की पूर्ति में समय अधिक लगेगा तो व्याकुलता होगी या निराशा, यदि उपलब्धि समीप आ रही हैं तो आशा। इस प्रकार अलग-अलग अवस्थाएँ भावों को बदलती रहती हैं- कभी आशा, कभी निराशा, कभी क्रोध, कभी क्षमा आदि।

इसका निदान है इच्छा को पकड़ लें, रोक दें, चाहे बलपूर्वक या बुद्धिपूर्वक। यदि मन में धारणा बना ली कि मुझे कुछ नहीं चाहिए तो संकल्प करते ही मन में स्थिरता आएगी, शान्ति मिलेगी। यदि इच्छा बढ़ाते हैं तो क्लेश होगा। जब इच्छा हमारे ऊपर है तो क्लेश और जब हम क्लेश के ऊपर हैं तो शान्ति मिलेगी, आत्मा शक्तिशाली अनुभव करेगा। इस प्रकार कोई भी इच्छा करते समय बुद्धिपूर्वक विचार करेंगे, चिन्तन करेंगे तो क्लेश-दु:ख से बच कर सुख शान्ति पाएँगे।

गीता ठीक कहती है- विषयों का निरन्तर सेवन करते रहने से व्यक्ति का क्रमश: पतन होता चला जाता है और निरन्तर साधना से व्यक्ति ऊर्ध्वमुखी होता चला जाता है। यही अध्यात्म है। **- ऋषि उद्यान, अजमेर।**

ग़ज़ल

ईश-भजन

पाप माफ नहीं करता ईश्वर वेद में कहता है,
तो बतलाओ ईश-भजन से क्या-कुछ मिलता है?
ईश भजन करने से ऐसा साहस आ जाता,
हो पहाड़ जैसा दु:ख वह भी राई लगता है।
जितनी देर भी जाकर बैठे कभी जो सत्संग में,
उतनी देर ये मन पापी चिन्तन से बचता है।
जब भी कोई सुधरा है सत्संग से सुधरा है,
मुंशीराम, अमीचन्द, मुगला साधक बनता है।
हमने रूप किया है अनुभव आज बताते हैं,
आत्मिक बल ही ईश-भजन से दिन-दिन बढ़ता है।

- आर्य संजीव 'रूप', गुधनी (बदायूँ)

पुस्तक - समीक्षा

पुस्तक का नाम - 'श्रीमद् दयानन्द भारती' (द्वय शतक)
कवि - बाबूराम शर्मा 'विभाकर'
प्रकाशक - सुमेधा प्रकाशन ५२/२, लाक्कार्टर्स, गाजियाबाद-२०१००१
मूल्य - १००=०० **पृष्ठ संख्या** - ८०

अविद्या, बाह्याडम्बर, विधवा विवाह, भाषा तथा देश में धर्म का मर्म समझाने वेदोद्धारक ऋषि दयानन्द आये थे। उन्होंने अन्धविश्वासों के ताण्डव नृत्य को दूर किया। अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए पाखण्ड का खण्डन किया। उनके जीवन प्रसङ्ग पर विद्वानों, विशेषज्ञों ने अपनी-अपनी लेखनी चलाई है। ऋषि ने संसार में महत्त्वपूर्ण कार्य कर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

कवि बाबूराम शर्मा 'विभाकर' ने २०० (द्वय शतक) छन्द रचकर ऋषि का सहज, सरल जीवन खण्डकाव्य के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। पाठक स्वयं पढ़कर काव्यमय हो जायेंगे। उसकी झलक प्रस्तुत है:-

जब तक शंका दूर नहीं हो,
तब तक पूजा नहीं करूँगा।
चैन नहीं पाऊँगा तब तक,
जब तक शिव को नहीं वरूँगा।
- × - ----×------×
आखिर क्या है मृत्यु अरे मन,
मुझे बता दे ओ मेरे मन।
साँस हुए क्या, मैं भी समझूँ,
प्राणों से क्या चलता जीवन?
-×- - - × -- - ×- - ×
निज पक्ष की पुष्टि में चाहे,
धरों युक्तियों का आलम्बन।
ध्यान रहे सर्वदा किन्तु, हो
हृदय, प्रकृति में कभी न ऐंठन।
- × ----× --- ×---×
शास्त्रार्थ करना अभीष्ट तो
निज गुरु रंगाचार बुला लो।
जाओ वृन्दावन को जाओ,
साहस है संवाद करा लो।

शर्मा जी को धन्यवाद। पाठक लाभ उठायें।

-देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	वेद संहिताएँ– (केवल मन्त्र)	
१.	ऋग्वेद संहिता (मूल) मन्त्र– वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	रु. ६००.००
२.	"यजुर्वेद संहिता"(मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१८०.००
३.	यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द (साधारण)	१००.००
४.	सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१६०.००
५.	अथर्ववेद संहिता (मूल) मन्त्र– वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	४००.००
६.	चतुर्वेद विषय सूची	४०.००
७.	सामवेद के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका	२.००
८.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सजिल्द	१२०.००
९.	ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य	५.००
	वेद भाष्य–(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)	
१०.	ऋग्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१५०.००
११.	ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१२.	ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१३.	ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
१४.	ऋग्वेदभाष्य पाचवां भाग (सजिल्द)	२५०.००
१५.	ऋग्वेदभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३००.००
१६.	ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१७.	ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१८.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल प्रथम भाग सजिल्द	७०.००
१९.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	६०.००
२०.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल पहला भाग सजिल्द	
२१.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल दूसरा भाग सजिल्द	
२२.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	१५०.००
२३.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द	३००.००
२४.	ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	२००.००
२५.	ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	९०.००
२६.	यजुर्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
२७.	यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५०.००
२८.	यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२५०.००
२९.	यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
	वेद भाषाभाष्य – (केवल हिन्दी भाष्य)	
३०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना	५.००
३१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
३२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	२५.००
३५.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	३०.००
३६.	ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३०.००
३७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग) सप्तम मण्डल पहला भाग (सजिल्द)	२५.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
४०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३५.००
४१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल (सजिल्द)	
४२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल (सजिल्द)	
४३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	५०.००
४५.	यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१००.००
४६.	यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३७५.००

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड

४७.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक)	
४८.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य)	४००.००
४९.	अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग का एक सेट	१५००.००

विविध

५०.	गोकरुणानिधि (बढ़िया)	५.००
५१.	स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	५.००
५२.	स्वीकारपत्र	३.००
५३.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी)	५.००

सिद्धान्त ग्रन्थ

५४.	सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	१००.००
५५.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार सजिल्द)	३०.००
५६.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार अजिल्द)	७.००
५७.	आर्याभिविनय (गुटका अजिल्द)	७.००

कर्मकाण्डीय

५८.	वैदिक नित्यकर्मविधि	२५.००
५९.	पञ्चमहायज्ञविधि	१२.००
६०.	विवाह–पद्धति	२०.००
६१.	संस्कारविधि (सजिल्द)	७०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
६२.	हवनमन्त्राः (बड़ा आकार)	५.००

पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ

६३.	अनुभ्रमोच्छेदन	
६४.	भ्रमोच्छेदन (साधारण)	४.००
६५.	भ्रमोच्छेदन (बढ़िया)	१०.००
६६.	भ्रान्तिनिवारण	
६७.	शिक्षापत्रीध्वान्त–निवारण (स्वामीनारायण मतखण्डन)	२.००
६८.	वेदविरुद्धमत–खण्डन	१०.००
६९.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण	२.००
७०.	शास्त्रार्थ काशी	८.००
७१.	शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार)	६.००
७२.	सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर)	७.००
७३.	शास्त्रार्थ जालंधर	३.००
७४.	शास्त्रार्थ अजमेर	३.००
७५.	शास्त्रार्थ बरेली (सत्यासत्य विवेक)	८.००
७६.	शास्त्रार्थ मसूदा	५.००
७७.	शास्त्रार्थ उदयपुर	४.००
७८.	शास्त्रार्थ फिरोजाबाद	१०.००
७९.	महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (सजिल्द)	४०.००

शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)

८०.	वर्णोच्चारण शिक्षा	१२.००
८१.	सन्धिविषय	४०.००
८२.	नामिक	
८३.	कारकीय	१०.००
८४.	सामासिक	४०.००
८५.	स्त्रैणताद्धित	
८६.	अव्ययार्थ	५.००
८७.	आख्यातिक (अजिल्द)	१५०.००

शेष भाग अगले अंक में.......

'परोपकारिणी सभा' में भाषण
(अजमेर-२१-११-२०१५)

-एम.वी.आर. शास्त्री

टिप्पणी :- माननीय श्री एम.वी.आर. शास्त्री जी सम्पादक 'आन्ध्रभूमि' एक अनुभवी पत्रकार, सिद्धहस्त साहित्यकार तथा अथक समाज सेवी, वेदभक्त, देशसेवक हैं। इस बार सभा के अनुरोध पर आप ऋषि मेला पर पधारे। आपने देश, धर्म व जाति रक्षा के लिए आर्य जनता के सामने अपने गम्भीर व प्रेरक विचार रखे। विद्वान् विचारक ने देश जाति के सामने जो गम्भीर समस्यायें हैं, उन पर अपने विचार व्यक्त किये। आपके सुझाये बताये समाधान से भले ही किसी को किसी बिन्दु पर असहमति हो, परन्तु शास्त्री जी के इस केन्द्रीय विचार बिन्दु से हर कोई सहमत होगा कि महर्षि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा सुझाया मार्ग ही कल्याण कारक है। स्वामी श्रद्धानन्द जी की सुझाई गई औषधि ही देश जाति को रोग मुक्त करेगी।

क्रान्तिवीर पं. नरेन्द्र जी की कर्मभूमि से पधारे शास्त्री जी को अपने मध्य पाकर आर्य जनता गद्‌गद् हो गई। सबकी उत्कट इच्छा है कि मान्य शास्त्री जी प्रति वर्ष ऋषि भूमि पधारें।

- राजेन्द्र जिज्ञासु

पिछले अंक का शेष भाग......

माता सीता देवी ने अपने पति श्री रामचन्द्र जी का '**आर्य-पुत्र**' कहकर सम्बोधन किया, उसी प्रकार मन्दोदरी ने भी अपने पति रावण का '**आर्य-पुत्र**' कहकर सम्बोधन किया था। चिन्ता की बात यह है कि इन दिनों वे ही लोग बुद्धिजीवियों के रूप में पहचान पाने लगे जो श्रीराम को '**आर्य**' के रूप में और रावण को '**द्रविड**' के रूप में पहचान कर आर्यों और द्रविड़ों के मध्य शाश्वत शत्रुता की मनगढ़न्त कहानियाँ सुनाते रहे। वैदिक संस्कृति के शत सहस्राब्दि वर्षों के प्राचीन इतिहास व आर्यावर्त के इतिहास के पाठ पढ़ाने वाले इन्हीं लोगों द्वारा किये गए तथ्यों के वक्र भाष्यों के कारण वर्तमान पीढ़ी के लोग अपनी जाति का प्राचीन वैभव, अपने पूर्वजों का महत्त्व, वेदों की विशिष्टता और विरासत में संप्राप्त आर्य-संस्कृति का वैशिष्ट्य आदि की जानकारी प्राप्त करने के अवसर खोने लगे।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि धर्म और आध्यात्म की बुनियाद पर भारत का निर्माण हुआ है। राष्ट्रीय सांस्कृतिक शोध के मूलाधार के रूप में मान्यता प्राप्त ये दोनों आजकल की अभारतीय मिथ्या धर्मनिरपेक्ष-विष संस्कृति से प्रेरित एवं प्रभावित समाज में अपमानजनक बातें सिद्ध हो गईं। अपनी आध्यात्मिक मूल संस्कृति से वर्तमान पीढ़ी के पृथकत्त्व के कारण राष्ट्रीय जीवन में कई विषमताएँ प्रश्रय पाने लगीं। सनातन धर्म अपने ही देश में पराये धर्म के रूप में पहचान पाने लगा। ईसाई और मुसलमान धर्मान्तरणों को बढ़ावा मिल रहा है। जिस हिन्दू समाज ने धर्म में अपनी आस्था प्रकट की, उस पर निरन्तर प्रहार होने लगे।

इतिहास इसका साक्षी रहा कि इस पुण्यभूमि पर कई विदेशी आक्रमण हुए और कई सौ वर्षों तक विदेशियों ने इस देश पर शासन चलाया। प्रसन्नता की बात यह है कि इतना बहुत कुछ होने के बावजूद अब भी इस देश में अस्सी प्रतिशत लोग हिन्दू धर्मावलम्बी ही हैं। दुनिया भर में इसे देखा जा सकता है कि किसी देश व समाज में बहुसंख्यक लोगों के धर्म को सभी क्षेत्रों में विशेष आदर एवं सम्मान मिल रहा है। बहुसंख्यक लोगों के धर्म को महत्त्व देते हुए, उस देश व समाज में रहने वाले अल्पसंख्यकों के धर्मों का भी आदर करने और उन्हें उस समाज में स्वेच्छापूर्वक जीवन बिताने का अधिकार देने की परम्परा जारी है, लेकिन चिन्ता की बात यह है कि एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में अपनी झूठी प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए हमें मूल्य चुकाना पड़ रहा है। भारत में बहुसंख्यक लोगों के धर्म का निरादर कर अल्पसंख्यक धर्मों को अपने सिर पर रखने की प्रथा चल रही है। अल्पसंख्यकों को जो सामाजिक सुरक्षा और सुविधाएँ मिल रही हैं, उनसे इस देश के बहुसंख्यक वर्ग के लोग वंचित रहे हैं।

मुसलमान और ईसाइयों के प्रार्थना-स्थलों और उनके कार्यकलापों में सरकार कभी दखलअंदाजी नहीं करती।

चिन्ता की बात यह है कि हिन्दू-मन्दिरों, देव स्थानों की सम्पत्ति और उनकी आय पर अपने नियन्त्रण को बनाए रखने का सरकार प्रयत्न करती रहती है। हज़-यात्रा पर निकले भक्तों को छूट देकर आम लोगों के धन का अपव्यय सरकार करती है, लेकिन अमरनाथ व मानसरोवर के यात्रियों के लिए न्यूनतम सुविधाएँ भी उपलब्ध कराने की बात सरकार नहीं सोचती। लेकिन यहीं सरकार तरह-तरह के उपाय सोचकर पुष्करों और कुम्भ मेलों के यात्रियों से अधिशुल्क के रूप में ज्यादा रुपये वसूल करती है। जो सिविल कोड देश भर के नागरिकों के लिए लागू होता है, वह मुसलमानों पर लागू नहीं होता है। मुसलमान एक से अधिक शादियाँ कर सकते हैं और परिवार-नियन्त्रण के नियम भी उन पर लागू नहीं होते, फलत: वे आबादी को बढ़ावा दे सकते हैं। जो नेता लोग रमजान के दिनों में रूमी टोपी पहनकर जनता के धन से इफ्तार पार्टी दे सकते हैं, वे दशहरा और श्रीराम नवमी के उत्सवों में भाग लेने निमन्त्रित करने पर यह अनुभव करते हैं कि उनके धर्म-निरपेक्षवाद का व्रत-भंग हो जाएगा। यदि हिन्दू धर्मावलम्बी अपने पैसों से स्थापित धार्मिक ट्रस्टों का '**हिन्दू**' शब्द को जोड़ते हुए नाम रखें, तो उन्हें आयकर में छूट नहीं दी जाती है। विदेशों से ईसाई धर्मान्तरणों को प्रोत्साहन देने जो हजारों-करोड़ों रुपये आते हैं, उनका कोई हिसाब नहीं देना पड़ता है। ईसाई मिशनरियों के दुष्कर्मों और धर्मान्तरण को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों पर कोई नियन्त्रण नहीं होगा।

समय परिसरों की सीमितता के कारण इसे विस्तारपूर्वक यहाँ बताने में मैं असमर्थ हूँ, लेकिन एक बात तो स्पष्ट है कि गोमाता को एक देवता के रूप में हम कई सदियों से मानने लगे। चाहे हमारी परम्पराएँ अलग क्यों न हो, धर्म भिन्न-भिन्न क्यों न हों, गोमाता की पूजा करने के सन्दर्भ में कोई मतभेद नहीं है। इन दिनों हमारे देश में गो-वध और गो मांस-भक्षण हो रहा है। संविधान में गो-वध का निषेध तो जरूर हुआ है। इन कारणों को दिखा कर स्वयं भारत सरकार ने, बिना संकोच के, आदेश जारी किए कि गो-वध किये बिना उच्च दरजे के चमड़े निर्यात नहीं कर सकते, मुनाफा कमा नहीं सकते और देश भर में उनके लिए चारा उपलब्ध कराने की समस्या का सामना नहीं कर सकते। अनेक राज्यों में यह कानून प्रचलन में था कि गो-वध निषेध है, लेकिन इस कानून का पालन नहीं हो रहा है। कर्नाटक राज्य के मुख्यमन्त्री ने कहा कि मुझे गोमांस खाने की तीव्र इच्छा है। देवी सरस्वती के मन्दिर कहे जाने वाले विश्वविद्यालयों में भी इन दिनों '**बीफ फेस्टिवल**' बे रोक-टोक होने लगे हैं। जम्मू कश्मीर के उच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया कि उस राज्य में गोवध का निषेध किया गया है, लेकिन उसी राज्य की विधानसभा के प्रतिनिधि गो मांस खाने लगे और खुले आम '**बीफ फेस्टिवल**' में भाग लेने लगे। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या हम स्वाधीन भारत में रहने लगे हैं या मुसलमानों का शासन अब भी चल रहा है? उत्तर प्रदेश राज्य में एक गाँव में एक बछड़े का अपहरण कर उसके मांस का भक्षण करने वाले मुसलमान व्यक्ति को स्थानीय लोगों ने खूब मारा और उसकी जान ले ली। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को लेकर देशभर के बुद्धिजीवी यह कह कर सरकार पर धावा बोलने लगे कि प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी और सम्पूर्ण हिन्दू समाज ने षड्यन्त्र रचा कर उस मुसलमान का वध किया।

बुद्धिजीवियों की इस प्रतिक्रिया को हम कैसे समझ सकते हैं?

बुद्धिजीवियों की बुद्धि घास चरने गयी। समूचा राष्ट्र संकट की स्थिति में है। इस अवसर पर हमें महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आदर्शों का स्मरण करना चाहिए। सन् १८५७ में दुर्भाग्यवश प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन सफल नहीं हुआ। गोरे शासकों ने मनमाने ढंग से शासन चलाया। राष्ट्र का संचालन करने वाली शक्तियाँ ढीली पड़ गईं। गो संरक्षण आन्दोलन चलाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण भारत में चेतना का संचार किया। सन् १८८० में उन्होंने '**गौ संरक्षणि महासभा**' का आरम्भ किया। महर्षि के निर्वाण के अनंतर भी इस महासभा ने अपने लक्ष्य की पूर्ति की दिशा में अपेक्षित कदम उठाये। महर्षि दयानन्द जी की विशिष्टता यह है कि उनके प्रवचनों से प्रभावित होकर भारी संख्या में मुसलमान लोगों ने भी गौसंरक्षण-अभियान में भाग लिया। श्री धर्मपाल जी ने अपने "British Origins of Cow Slaughter in India" शीर्षक ग्रन्थ में इसका उल्लेख किया कि कहीं किसी के घर में गोवध की पूर्व सूचना पाते ही उस गाँव के सभी मुसलमान भी वहाँ जाते थे और उनके घर के सामने धरना करते थे और उस प्रयत्न को रोकते थे। इस अंतर को आप ध्यान से पहचानने का प्रयत्न कीजिए कि हिन्दू और मुसलमान मिलजुल कर

उस काल में गोवध का विरोध कैसे किया करते थे...''इन दिनों हम गोमांस का भक्षण क्यों नहीं कर सकते हैं?'' यों हिन्दू कहे जानेवाले लोग ही निर्लज्ज होकर प्रकट करने लगे। यह परिणाम वर्तमान युग में नैतिक मूल्यों के पतन का प्रमाण दे रहा है।

हे आर्य बंधुजन, मूल्यों के पतन को रोकना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। हमारी जाति के पूरी तरह से भ्रष्ट होने तक हमें प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। संपूर्ण समाज में चेतना को जाग्रत करने का समय आ गया है। इस देश में भारतीयता की भावना को सुरिक्षत रखने के लिए गाय और वेदों को हमें सुरक्षा प्रदान करनी होगी। उन्हें सुरक्षित रखने के लिए हमें वेद-विज्ञान को विश्व-व्याप्त बनाने की आवश्यकता है। 'कृण्वंतो विश्वमार्यम्' वाली वेद-सूक्ति का इस आधुनिक युग में भी आचरण करने हमें कटिबद्ध होना चाहिए।

मुसलमान धर्मावलंबियों, क्रिश्चियन मिशनरियों, उनका समर्थन करनेवाली विदेशी ताकतों, इन ताकतों के अनुयायी हमारे मिथ्या-धर्मनिरपेक्षवादियों, दुष्ट राजनीतिक शक्तियों और राष्ट्र विरोधी व्यापारियों की अपवित्र मैत्री (Unholly alliance) का सामना करना सरल काम नहीं है। इस देश की जनता की आकांक्षाओं की पूर्ति करने, कई महात्माओं के तपोफल के कारण और संपूर्ण देश में उठी एक उज्जवल चेतना-तरंग के कारण कई वर्षों के बाद इस देश के मुख्य धर्म के प्रति सच्ची प्रतिबद्धता रखने वाली श्री नरेन्द्र मोदी की सरकार शासन चला रही है। कई लोगों को यह परिणाम असह्य प्रतीत हुआ। पाँच सालों तक इस सरकार को चलाने में बाधाएँ डालने और कई विवाद सामने लाकर सामान्य लोगों की दृष्टि में इस सरकार को बदनाम करने के कई प्रयत्न होने लगे हैं। फिर से इटली की रानी के रिमोट कन्ट्रोल शासन को इस देश में लागू करने के कई प्रयत्न हो रहे हैं।

इस स्थिति का सामना करना केवल भारतीय जनता पार्टी की समस्या नहीं है। भारतीय जनता पार्टी का समर्थन करने वाले राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और उसकी अन्य संस्थाओं मात्र के लिए यह एक चुनौती नहीं है। यह संपूर्ण भारतीय संस्कृति और भारतीय समाज पर किया गया एक प्रहार है। इसी कारण से सनातन धर्म की वारिस कई आध्यात्मिक, धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष संस्थाओं का भी इस धर्म-युद्ध में सक्रिय भाग लेना अत्यंत आवश्यक है। सनातन धर्म में आस्था रखने वाले हर एक व्यक्ति पर होने वाले इन अत्याचारों को खंडन करते हुए धर्म की रक्षा करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। यदि हम इसकी उपेक्षा करेंगे तो भविष्य में भारत में धर्म के लिए कोई स्थान नहीं बचेगा, अस्तित्व के हमारे होने या न होने में कोई अंतर नहीं होगा।

इन महत्त्वपूर्ण क्षणों में आर्य समाज की भूमिका निर्णायक होती है। इस महान् संस्था के आलोकमय इतिहास का अवलोकन करने पर मुझ जैसे लोगों को यही विदित होता है कि जब-जब देश व समाज पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा, तब-तब आर्य समाज ने इस पुण्य भूमि की सांस्कृतिक पहचान को बचाये रखने में कोई कोरकसर नहीं छोड़ी। महर्षि दयानन्द जी ने सन् १८८० में गोसंरक्षण आन्दोलन चलाया... स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सफलता पूर्वक इस आन्दोलन को आगे बढ़ाया। सन् १९२० के बाद 'शुद्धि' और 'संगटन' आन्दोलनों के संदर्भ में आत्म बलिदान करने की घटना से लेकर हैदराबाद राज्य में निजाम शासन की तानाशाही के विरुद्ध विद्रोह करना, सन् १९३० के बाद 'सत्याग्रह' आन्दोलनों में भाग लेकर हिन्दू समाज को सुरक्षा प्रदान करने का बीड़ा उठाना, भगतसिंह जैसे कई क्रांतिकारियों को अदम्य प्रेरणा देना और अंततः पंजाब में कई जन-आन्दोलनों का जोरदार समर्थन करना- इस प्रकार आर्य समाज की उपलब्धियों और इसकी प्रतिबद्धता के पक्ष में कई प्रमाण दे सकते हैं।

मेरी सीमित बुद्धि से तो ऐसा लग रहा है कि भारत की मूल संस्कृति का संरक्षण करने की दिशा में संघर्ष-चेतना के प्रतीक बन कर आर्य समाज ने बहुत कुछ किया है, किन्तु स्वामी श्रद्धानंद, लाजपत राय, नरेन्द्र जी और आचार्य उदयवीर शास्त्री जैसे दिग्गजों के निधन के पश्चात्, न जाने क्यों, आर्य समाज ने अपनी परिधि को सीमित कर दिया। वेदाध्ययन और वैदिक कर्मकांड को ही प्राथमिकता दी जा रही है। सामाजिक दुराचारों और धार्मिक विसंगतियों का सामना करने को जो महत्त्व दिया जा रहा है, उसकी तुलना में समकालीन समस्याओं का भंडाफोड़ करने और भारतीय संस्कृति पर अधार्मिक शक्तियों के प्रहार को रोकने को प्राथमिकता नहीं दी जा रही है। समकालीन सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक विडंबनओं के विरुद्ध अपने

विद्रोह को व्यक्त करने की दिशा में आर्य समाज की ओर से कोई विशेष प्रयत्न नहीं हो रहा है।

यदि मेरी यह धारणा गलत हो, तो मैं समझता हूँ कि मुझसे बड़ा कोई प्रसन्न नहीं होगा। यदि मेरे विचारों में लेश मात्र भी विचार योग्य अंश हो, तो यहाँ उपस्थित दिग्गज, पंडित और मार्गदर्शक इसके बारे में सोचने का उपक्रम करें, मैं स्वयं को धन्य समझूँगा। मेरी यह प्रबल कामना रही कि अब तक वेद, विज्ञान और वैदिक परम्पराओं का निष्ठापूर्वक संरक्षण कर धर्म के प्रचार को निरन्तर करने वाली आर्यसमाज महा संस्था भविष्य में भी सनातन धर्म के पुनरुत्थान के इस बृहत् अभियान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाए।

विदेशी ताकतों द्वारा दुराक्रमण और धर्मान्तरणों के कई सदियों का इतिहास इसका साक्षी रहा कि इस देश से लाखों और करोड़ों की सख्या में हिन्दू बाहर गए थे, किन्तु ऐसे लोगों की वापसी की बात हिन्दू समाज ने कभी नहीं सोची। आर्य समाज ने हिन्दुओं के पुनरागमन को एक आवश्यकता के रूप में पहचान लिया और उसके लिए कार्य करता रहा। सन् १९२३ में लाला लाजपतराय, मदनमोहन मालवीय जैसे नेताओं से मिलकर स्वामी श्रद्धानंद जी ने 'शुद्धि' और 'संगठन' चलाए। इन आन्दोलनों ने हिन्दू समाज में चेतना को जाग्रत किया और परधर्मावलंबी इन आन्दोलनों से कतरा रहे थे। लाखों की संख्या में मलखाना राजपूतों को पुनः हिन्दू धर्म स्वीकार करने के पक्ष में स्वामी श्रद्धानंद ने कदम उठाए। मुसलमानों ने श्रद्धानंद जी की जान ले ली, तब ये आन्दोलन समाप्त हुए। यह सच है कि आर्य समाज अब भी 'शुद्धि' कार्यक्रम को बड़ी निष्ठा से चला रहे हैं, लेकिन आततायी मुसलमानों और ईसाइयों द्वारा धर्मान्तरणों को जो प्रोत्साहन मिल रहा है, उसे रोकने की शक्ति आर्यसमाज में नहीं है। जो लोग सनातन धर्म में आस्था रखते हैं और जो संस्थाएँ हिन्दू समाज की एकता को चाहती हैं, उन्हें अपने कदम आगे बढ़ाकर इस कार्य को सम्पन्न करना चाहिए। लगभग एक सौ वर्ष पूर्व श्री उपेन्द्रनाथ मुखर्जी ने 'The Dying Race' शीर्षक पुस्तक लिखकर तहलका मचा दिया था। इस ग्रन्थ में आँकडों सहित इन्होंने इस तथ्य को निरूपित किया कि भारत में हिन्दुओं की आबादी घटती जा रही है और मुसलमानों की बढ़ती जा रही है। चार सौ वर्षों के बाद इस देश में हिन्दू जाति विलुप्त हो जाएगी। एक सौ वर्ष पूर्व इस लेखक ने जो चुनौती दी है, वह आज भी प्रासंगिक है। सन् २०११ की जनगणना इस तथ्य की पुष्टि करती है कि अब भी इस देश में ७४ प्रतिशत लोग हिन्दू ही हैं, लेकिन यह धारणा नितांत गलत है। कई दलित परिवारों के लोग ईसाई धर्म को स्वीकार करने के बावजूद आरक्षण की सुविधाओं से वंचित न हो सकें, इसलिए स्वयं को 'हिन्दू' बताने लगे। ईसाई धर्म को स्वीकार करने वाले अन्य जातियों के लोग भी इसी नीति को अपनाने लगे। इस कारण से जनगणना यथास्थिति को प्रतिबिंबित नहीं करती। उत्तर-पूर्व राज्य पूर्णतः ईसाई धर्म के आधीन हो गए। अन्य राज्यों में भी लाखों-करोड़ों की विदेशी मुद्रा के बल पर ईसाई धर्मातरणों को प्रोत्साहन मिल रहा है। हमें कोई यह आश्वासन नहीं दे सकता कि निकट भविष्य में यह बात सुनने की नौबत न आये कि भारत में हिन्दू अल्पसंख्यक बन गए। हमें जाग्रत रहना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा लिखी गई रचना 'Hindu Sangathan, Saviour of the Dying Race' को हमें पढ़ना चाहिए और अधिक से अधिक लोगों को पढ़ाना चाहिए। सुषुप्त हिन्दू समाज में चेतना का शंखनाद करना चाहिए। 'शुद्धि' और 'संगठन' के अभियानों को पुनः चलाने की आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा विरासत में संप्राप्त मूल्यों से पुनीत आर्य समाज को इस अभियान का नेतृत्व करना चाहिए। यह निवेदन मैं आपसे विनम्रता पूर्वक कर रहा हूँ।

यदि मेरे विचार सत्य से दूर हैं, यदि मेरे विचार परंपरानुमोदित नहीं हैं और यदि मेरे विचार तर्कसम्मत भी नहीं हैं, तो मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। क्षमा आप जैसे विद्वानों का आभूषण है।

मैंने आपका बहुत समय ले लिया है। आपने ध्यान से सुना। आपके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता को प्रकट करने में असमर्थता का अनुभव कर रहा हूँ। कोई व्यक्ति शब्दों की उतनी कमी महसूस नहीं करता है, जितनी कृतज्ञता को प्रकट करने के संदर्भ में। फिर भी मैं औपचारिकता का निर्वाह करने के लिए लाचार हूँ। इस सभा में भाग लेकर आपके समक्ष मुझे अपने विचारों को प्रकट करने का सुअवसर मान्यश्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी और कार्यक्रम के आयोजकों ने दिया है। इसके लिए मैं उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा हूँ।

- एम.वी.आर. शास्त्री, आन्ध्रप्रदेश

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**
IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केवल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डोडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३० नवम्बर २०१५ तक)

१. श्रीमती सुशीला भगत, जालंधर, पंजाब २. श्री निखलेश सोमानी, अजमेर ३. डॉ. श्री रमेश क्षेत्रपाल/डॉ. श्रीमती सरोज क्षेत्रपाल, अजमेर ४. जेनिथ एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली ५. श्री मृत्युजंय/श्रीमती सुजिता, अजमेर ६. श्री रामचन्द्र/श्रीमती श्याम कँवर गोयल, सूरत, गुजरात ७. श्री ओमप्रकाश गोयल, सूरत, गुजरात ८. श्रीमती कंचन शारदा, अजमेर ९. श्री दिव्यांश त्यागी/श्रीमती प्रिंसी त्यागी, दिल्ली १०. श्री सत्यदेव गुप्ता, अजमेर ११. श्री गोकुल चन्द भगत, जालंधर, पंजाब १२. श्रीमती सुशीला भगत, जालंधर, पंजाब १३. श्री मनोज कपूर, जालंधर, पंजाब १४. डॉ. राजेश पसरिचा, जालंधर, पंजाब १५. डॉ. कुमुद पसरिचा, जालंधर, पंजाब १६. श्री के.के.आनन्द, जालंधर, पंजाब १७. यजु आर्य, जालंधर पंजाब १८. श्री विजय खरबंदा, जालंधर पंजाब १९. श्री अश्विनी कुमार भगत, जालंधर, पंजाब २०. श्री राकेश भगत, जालंधर,पंजाब २१. श्री सुशान्त शर्मा, जालंधर, पंजाब २२. डॉ. बी.एस. चोपड़ा, जालंधर, पंजाब २३. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली २४. श्री अवनीश कपूर, नई दिल्ली २५. श्री मनोहर खिंवटाना, नागौर, राज. २६. स्व. श्री चन्द्रप्रकाश/श्रीमती उर्मिला, जोधपुर, राज. २७. श्रीमती निर्मला गुप्त, अजमेर २८. श्रीमती कमला देवी/डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर २९. आर्यसमाज कुचेरा, नागौर, राज. ३०. श्री कन्हैयालाल आर्य, भीलवाड़ा, राज. ३१. श्रीमती गुलाब आर्या/श्री सवाई आर्य, बालोतरा, राज. ३२. सुश्री स्वधा तवरी, अकोला, महाराष्ट्र ३३. श्रीमती मंजु शर्मा, अजमेर ३४. श्री ओमप्रकाश ईनाणी, अजमेर ३५. श्री जस्साराम प्रजापति, बाड़मेर, राज. ३६. श्री विष्णुपुरिया महेश्वरी, अजमेर ३७. श्री रामप्रकाश शर्मा, जोधपुर, राज. ३८. रमेश दत्त दीक्षित, मेरठ, उ.प्र. ३९. दयालाल एच. रमन, अहमदाबाद, गुजरात ४०. श्री दिनेशचन्द नवाल, अजमेर ४१. श्री गजेन्द्र अरोड़ा, पाली, राज. ४२. श्री रामरति, रोहतक, हरियाणा ४३. श्री भँवरलाल व्यास, भीलवाड़ा, राज. ४४. श्री सदाशिव, उज्जैन, म.प्र. ४५.श्रीमती रमा आचार्या, जोधपुर, राज. ४६. श्री हविषकृत आर्य, पानीपत, हरियाणा ४७. श्री रमेशचन्द/श्रीमती रेखा आर्या, नई दिल्ली ४८. श्री पंकज कुमार गर्ग, कोलकाता, पं. बंगाल ४९. श्री पदम कुमार गर्ग, कोलकाता, पं. बंगाल ५०. श्री सत्यव्रत गर्ग, कोलकाता, पं. बंगाल ५१. श्रीमती रेणु शर्मा, गुड़गाँव, हरियाणा ५२. श्रीमती उषा मारवाह, नईदिल्ली ५३. श्रीमती अमृता बहन, नई दिल्ली ५४. श्री सुदर्शन कोठारी/श्रीमती इन्दिरा कोठारी, उदयपुर, राज. ५५. श्रीमती आशा शर्मा, जयपुर, राज. ५६. श्री अमर सिंह आर्य, करनाल, हरियाणा ५८. श्री छज्जूराम, अजमेर ५९. प्रियव्रत, नई दिल्ली ६०. श्री गोवर्धन लाल झँवर, सिहोर, म.प्र. ६१. रोहित अग्रवाल, जालंधर, पंजाब।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३० नवम्बर २०१५ तक)

१. गोवर्धन प्रसाद खण्डेलवाल, अजमेर २. श्वेता शर्मा, बैंगलोर, कर्नाटक ३. श्री गुरुकृपा लोजिस्टिक, मुम्बई, महाराष्ट्र ४. स्व. श्री रामप्रकाश गुप्ता, अजमेर ५. श्रीमती कमला देवी/ डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ६. आर्य समाज, कुचेरा, नागौर ७. श्री सुधीर कुमार, जोधपुर, राज. ८. श्रीमती चन्द्रकान्ता यादव, अजमेर ९. स्व. श्री अन्धे सत्यधीर,

निजामाबाद, तेलंगाना १०. श्रीमती ओमकुमारी शर्मा, अजमेर ११. श्रीमती कमला तँवर, अजमेर १२. श्रीमती सुशीला शर्मा, अजमेर १३. श्री भवानीराम पाटीदारआर्य, मंदसौर, म.प्र. १४. माता ओमवती, हरियाणा १५. श्री शैलेश गुप्ता, इन्दौर, म.प्र. १६. श्री बाबूलाल जोशी, इन्दौर, म.प्र. १७. श्री नारायण सिंह राठौड़, अजमेर १८. श्रीमती प्रमिला मित्तल, अजमेर १९. श्रीमती तीजी बाई, विजयनगर २०. श्रीमती विमला आर्य, विजयनगर, अजमेर २१. श्री पुरुषोत्तम आर्य, विजयनगर, अजमेर २२. श्री यज्ञसेन आर्य, विजयनगर, अजमेर २३. श्रीमती सुधा मेहरा, अजमेर २४. श्री मयंक कुमार, अजमेर २५. गुप्ता परिवार, जोधपुर, राज. २६. श्री विनय लोढ़ा, जयपुर, राज. २७. श्री निशान्त शर्मा, जयपुर, राज. २८. श्री जितेन्द्र गर्ग, जयपुर, राज. २९. श्री राकेश लोहिया, जयपुर, राज. ३०. श्री रामकिशोर शर्मा, जयपुर, राज. ३१. डॉ. प्रशान्त शर्मा, जयपुर, राज. ३२. श्री राजेन्द्र शर्मा, जयपुर, राज. ३३. श्री नितिन अग्रवाल, जयपुर, राज. ३४. श्री जयदेव शर्मा, जयपुर, राज. ३५. श्री दादूदयाल पाटीदार, जयपुर,राज. ३६. श्री शैलेश अवस्थी, जयपुर, राज. ३७. श्री महावीर सिंह चौधरी, जयपुर, राज. ३८. श्री रोशनलाल रमेश कुमार अग्रवाल ३९. श्री विष्णु गुप्ता, जयपुर,राज. ४०. श्री शिवनाथ वर्मा, जयपुर, राज. ४१. श्री मनोज कुमार जैमिनी, जयपुर, राज. ४२. श्री अमित निगम, जयपुर, राज. ४३. श्री निरव, जयपुर, राज. ४४. माताजी, जमानी आश्रम, ईटारसी ४५. श्री हेमन्त दुबे, ईटारसी ४६. श्री वेदप्रकाश शर्मा, भोपाल, म.प्र. ४७. श्री सज्जन शुक्ला, छिन्दवाडा म.प्र. ४८. श्री जितेन्द्र, हरदा ४९. श्री ओमप्रकाश अजमेरा, अजमेर ५०. श्रीमती वीणा श्रृंगी, कोटा, राज. ५१. श्री देवदत्त, अजमेर ५२. श्री मनोहर लाल मुलासिया, मंदसौर, म.प्र. ५३. श्री कुलदीप आर्य, भिवानी, हरियाणा ५४. श्री भूदेव कोशी, जयपुर, राज. ५५. श्री श्यामसुन्दर झँवर, ब्यावर, राज. ५६. श्री सत्यवीर सिंह मलिक, सोनीपत, हरियाणा ५७. श्री अमर सिंह आर्य, जयपुर, राज. ५८. श्री सोमश्री, अजमेर ५९. श्री वेदप्रकाश, कासगंज, उ.प्र. ६०. श्री मनोज स्वर्णकार, नीमच, म.प्र. ६१. डॉ. धर्मवीर कुंज, रोहतक, हरियाणा ६२. श्री भगवत सिंह आर्य, सिहोर, म.प्र. ६३. श्री बाबूलाल झँवर, सिहोर, म.प्र. ६४. शेरसिंह आर्य, रेवाड़ी, हरियाणा ६५. श्रीमती अरुणा गौड़, अजमेर ६६. श्री सुशील, जोधपुर, राज. ६७. सुश्री गार्गी/दयानन्द/श्री घनश्याम आर्य, भीलवाड़ा, राज. ६८. श्री जगदीशचन्द नागर, बारान ६९. श्री किशनलाल ७०. श्री नारायण/श्री जीवनमल सोनी, बीकानेर, राज. ७१. माँगीलाल आर्य, पाली, राज. ७२. श्री रोतुमल, चाँपानेरी ७३. श्रीमती सीता माता, अजमेर ७४. श्रीमती पुष्पा देवी झँवर, ब्यावर ७५. श्री कमलेश पुरोहित, अजमेर ७६. श्री हरीशचन्द्र चौहान, अजमेर ७७. श्रीमती चन्द्रकान्ता छापेरवाल, अजमेर ७८. श्री प्रेमचन्द आर्य, पंचकुला, हरियाणा ७९. श्री नगनुराम जाट, नागौर, राज. ८०. श्री दिलीप, आगरा, उ.प्र. ८१. श्री कपिल सोनी ८२. श्री रामप्रसाद, अजमेर ८३. श्री वेदप्रकाश सिंह चौहान, अजमेर ८४. श्री नरसिंह भाई/शंकरभाई आर्य, बड़वान, गुजरात ८५. श्री मनसुख भाई/धनजी भाई, बड़वान, गुजरात ८६. श्री शान्ति लाल/धन्नाजीभाई, बड़वान, गुजरात ८७. श्रीमती गीता बेन घनश्याम भाई आर्य, सुरेन्द्र नगर, गुजरात ८८. श्री कन्हैयालाल ८९. श्री वेदवीणा आर्य, चुरु, राज. ९०. श्रीमती वेदबाला आर्य, चुरु, राज. ९१. आर्य समाज, गुजरात ९२. श्री ईश्वरभाई/नानुभाई, गुजरात ९३. श्रीमती करुणा देवी विजय कुमार कानेड़, लातुर, महाराष्ट्र ९४. श्रीमती कला बाई, विदिशा, म.प्र. ९५. श्रीमती संक्या सोनी, गुड़गाँव, हरियाणा ९६. श्री कुलदीप कुमार आर्य, कोटा, राज. ९७. श्री श्रीराम सिंह, गोपालगंज ९८. श्री जितेन्द्र अकोलते, अकोला, महाराष्ट्र ९९. श्रीमती नर्वदा देवी कालानी, पाली, राज. १००. श्री अजयकुमार चकोरा, गुड़गाँव, हरियाणा १०१. श्री अरविन्द राठी, भीलवाड़ा, राज. १०२. श्री अरुण मुनि, रोजड़, गुजरात, १०३. श्री केशवलाल, जयपुर, राज.। **– परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

जिज्ञासा समाधान – १०१

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा १– योग के आठ अंगों में जिनका 'साधन पाद' में उल्लेख है, छठा अंग 'धारणा' है। उसमें मन को शरीर के किसी एक अंग– जैसे नासिका, मस्तक आदि पर स्थिर करने की बात कही है। इसी स्थान पर आगे ध्यान, समाधि लगती है, परन्तु 'समाधि पाद' में सम्प्रज्ञात समाधि के अन्तर्गत जब वितर्क रूपी स्थिति, जिसमें पृथिवी आदि स्थूल भूतों का साक्षात्कार होता है, उसमें मन को नासिका, जिह्वा आदि अलग-अलग स्थानों पर लगाने का उल्लेख है। मेरी शंका यही है कि धारणा के समय जब एक स्थान चुन लिया है तो फिर वितर्क समाधि में अलग-अलग स्थान क्यों?

आशा है, मैं अपनी जिज्ञासा को ठीक प्रकार प्रकट कर पाया हूँ। आपसे निवेदन है कि इसका समाधान देने की कृपा करें।

– ज्ञानप्रकाश कुकरेजा, ७८६/८, अर्बन स्टेट, करनाल, हरियाणा-१३२००१

समाधान– योग के आठ अंगों में धारणा छठा अंग है। धारणा की परिभाषा करते हुए महर्षि पतञ्जलि ने लिखा– "**देशबन्धश्चित्तस्य धारणा।**" इस सूत्र की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के उपासना प्रकरण में लिखा– "जब उपासना योग के पूर्वोक्त पाँचों अंग सिद्ध हो जाते हैं, तब उसका छठा अंग धारणा भी यथावत् प्राप्त होती है। धारणा उसको कहते हैं कि मन को चञ्चलता से छुड़ाके नाभि, हृदय, मस्तक, नासिका और जीभ के अग्रभाग आदि देशों में स्थिर करके ओंकार का जप और उसका अर्थ जो परमेश्वर है, उसका विचार करना।" धारणा के लिए मुख्य बात अपने मन को एक स्थान पर टिका लेना, स्थिर कर लेना है। टिके हुए स्थान पर ही ध्यान करना और वहीं पर समाधि का लगना होता है। इसके लिए महर्षि पतञ्जलि ने लिखा– "**त्रयमेकत्र संयमः**" अर्थात् धारणा, ध्यान, समाधि तीनों का एक विषय हो जाना संयम कहलाता है। इस सूत्र पर महर्षि दयानन्द ने लिखा– "जिस देश में धारणा की जाये, उसी में ध्यान और उसी में समाधि, अर्थात् ध्यान करने योग्य परमेश्वर में मग्न हो जाने को संयम कहते हैं, जो एक ही काल में तीनों का मेल होना, अर्थात् धारणा से संयुक्त ध्यान और ध्यान से संयुक्त समाधि होती है। उसमें बहुत सूक्ष्म काल का भेद रहता है, परन्तु जब समाधि होती है, तब आनन्द के बीच में तीनों का फल एक ही हो जाता है।" ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

धारणा+ध्यान+समाधि= संयम।

अब आपकी बात पर आते हैं, आपने जो कहा कि "......सम्प्रज्ञात समाधि के अन्तर्गत जब वितर्क रूपी स्थिति जिसमें पृथिवी आदि स्थूल भूतों का साक्षात्कार होता है, उसमें मन को नासिका, जिह्वा आदि अलग-अलग स्थानों पर लगाने का उल्लेख है।" आपकी यह बात "**वितर्कविचारानन्दास्मिता.....।**" योगदर्शन १.१७ इस सूत्र में नहीं कही गई, हाँ "**विषयवती वा प्रवृत्तिरुत्पन्ना मनसः स्थितिनिबन्धनी।**" योगदर्शन १.३५ इसमें कही है। इसमें वितर्क समाधि की बात नहीं, यहाँ तो मन की स्थिरता का कारण बताया है। यहाँ कहा है– नासिकाग्र आदि स्थानों पर चित्त को स्थिर करने से उत्पन्न दिव्यगन्धादि विषयों वाली प्रवृत्ति मन की स्थिति का कारण होती है।

इस सूत्र से पहले प्राणायाम का वर्णन किया हुआ है। ऋषि ने प्राणायाम को चित्त की स्थिरता का प्रमुख उपाय कहा है, अर्थात् प्राणायाम मन स्थिर करने का प्रमुख उपाय है। अब इसके आगे मन को स्थिर करने के अन्य गौण उपाय कहे हैं, उनमें यह उपाय भी है। जब योगाभ्यासी जिह्वाग्र, नासिकाग्र आदि स्थानों पर मन को स्थिर करता है, तब दिव्यरसादि की अनुभूति होती है। यह अनुभूति रूप व्यापार सामान्य न होकर उत्कृष्ट होता है। यह प्रवृत्ति मन को एकाग्र करने में सहायक होती है और साधक का अतीन्द्रिय पदार्थों को जानने में विश्वास पैदा होता है और श्रद्धा पैदा होती है। तात्पर्य यह हुआ कि स्थान विशेष पर धारणा कर मन को स्थिर (एकाग्र) करना है।

वितर्क आदि समाधि सालम्ब हैं। वहाँ स्थूल का आलम्बन करते हैं, अर्थात् नासिकाग्रादि का आलम्बन

करना वितर्क कहलाता है। वितर्क समाधि एक-एक स्थान का आलम्बन करने से होती है। आपने जो पूछा- 'धारणा के समय जब एक स्थान चुन लिया है तो फिर वितर्क समाधि में अलग-अलग स्थान क्यों?' आप इस वितर्क समाधि के स्वरूप को समझेंगे तो आपको यह शंका नहीं होगी। वितर्क समाधि सालम्ब समाधि है और वे आलम्बन स्थूल हैं, अलग-अलग हैं। अलग-अलग होने पर अलग-अलग स्थान धारणा के लिए चुने हैं।

धारणा के लिए भी ऋषि ने केवल एक ही स्थान निश्चित नहीं किया, वहाँ भी अनेक स्थान कहें हैं। अनेक में से कोई एक तो है, पर केवल एक नहीं है। जब दिव्य गन्ध की अनुभूति करनी है तो धारणा स्थल एक नासिकाग्र ही होता है, वहाँ स्थान बदले नहीं जाते। ऐसे ही अन्य विषयों में भी है। इसलिए जो अलग-अलग स्थान आप देख रहे हैं, वे अनेक विषयों को लेकर देख रहे हैं, जब एक ही विषय को लेकर देखेंगे तो अलग-अलग धारणा स्थल न देखकर एक ही स्थान देख पायेंगे।

जिज्ञासा २- मैं महर्षि दयानन्द जी का एक बहुत छोटा सिपाही हूँ, दैनिक यज्ञ एवं दोनों समय सन्ध्या करता हूँ, किन्तु सन्ध्या करते वक्त जब मैं मनसा परिक्रमा मन्त्र का अर्थ भाव के साथ उच्चारण करता हूँ तो निम्नलिखित शंका घेर लेती है-

(क) मनसा परिक्रमा मन्त्रों में हम दिशाओं, अग्नि, सूर्य, लता आदि जड़ पदार्थों को नमन करते हैं। कृपया, भाव स्पष्ट करें।

(ख) हर जीव अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर आयु, देश, स्थिति आदि प्राप्त करता है, लेकिन बहुत से लोग बेईमानी, छल-कपट के द्वारा भाग्य से अधिक धन अर्जित कर लेते हैं, जो कि उसके प्रारब्ध से ज्यादा होता है। कृपया, थोड़ा प्रकाश डाल कर अज्ञान दूर करें।

- सुरेन्द्र कुमार, डब्ल्यू-२-३४९-बी, नांगल राया, नई दिल्ली-११००४६

समाधान- २ **(क)** महर्षि ने सन्ध्या करने का विधान मनुष्यों के लिए किया है। सन्ध्या में जिन मन्त्रों का विनियोग जिस क्रम से किया है, वह अपने आप में सन्ध्योपासना करने की वैज्ञानिक शैली है। सन्ध्या के प्रारम्भ से अन्त तक जिस क्रम को महर्षि ने रखा है, उस क्रम से साधक स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाता चला जाता है।

आर्य जगत् मूर्धन्य दार्शनिक योग्य विद्वान् पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ने इस विषय पर चिन्तन कर सन्ध्या विषय को लेकर 'सन्ध्या क्या, क्यों, कैसे' पुस्तक लिखी है। उसके आधार पर यहाँ हम कुछ लिखते हैं।

सन्ध्या को चार भागों में विभक्त करके देखें- १. आचमन मन्त्र से लेकर प्राणायाम मन्त्र पर्यन्त, २. अघमर्षण मन्त्र, ३. मनसा परिक्रमा मन्त्र और ४. उपस्थान मन्त्र। **प्रथम** भाग में अपने शरीर=पिण्ड में ईश्वर के गुणों का विचार करना। इन्द्रिय स्पर्श, मार्जन एवं प्राणायाम मन्त्र में इसी पर बल दिया गया है, अर्थात् शरीर, प्राण व इन्द्रियों की बलवत्ता पर बल दिया गया है। **दूसरा**- पिण्ड से आगे ब्रह्माण्ड को देखते हुए, ईश्वर का विचार करना, जो अघमर्षण मन्त्रों में हैं। पिण्ड केवल मेरा अपना है, किन्तु ब्रह्माण्ड मेरा अपना भी है और सभी प्राणियों का भी। ब्रह्माण्ड सबके साझे का पिण्ड है। **तीसरा**- स्थूल से सूक्ष्मता की ओर लेकर जाने का है। पिण्ड और ब्रह्माण्ड ये स्थूल हैं, इन स्थूल से सूक्ष्म मन है, उस मन को सर्वत्र दौड़ाकर सर्वत्र परमेश्वर का चिन्तन करना, अर्थात् सब दिशाओं-उपदिशाओं में परमेश्वर का भान करना। **चौथा**- मन से भी परे आत्मा को परमात्मा के निकट ले जाना, जो कि हम उपस्थान मन्त्रों के द्वारा परमेश्वर के निकट होते हैं। यह स्थिति सन्ध्या में सर्वोत्कृष्ट है। हमें इस स्थिति तक पहुँचना है, अर्थात् परमेश्वर के निकट अपनी आत्मा को ले जाना है।

अब आपकी जिज्ञासा पर विचार करते हैं। मनसा परिक्रमा मन्त्रों में जो कहा गया है कि सब दिशाओं में परमात्मा अपनी विभिन्न शक्ति स्वरूप से स्वामी है। सबके लिए नमस्कार व अपने अन्दर व अन्य के अन्दर स्थित द्वेष को दूर करने की प्रार्थना। आपका कथन है कि "इन दिशाओं, अग्नि, सूर्य, लता आदि को नमन करने का क्या भाव है?" इन मन्त्रों में जड़ और चेतन दोनों का ही कथन है और दोनों के लिए नमस्कार करने को कहा है। इन छः मन्त्रों में अग्नि, इन्द्र, वरुण, सोम, विष्णु और बृहस्पति, ये

नाम सब दिशाओं में स्थित परमात्मा के हैं और इसी प्रकार असित: स्वज: और श्वित्र, ये नाम भी परमेश्वर के हैं। इन सभी स्वरूप वाले परमेश्वर को नमस्कार करना, अर्थात् उस परमेश्वर का सम्मान करना, उससे यथायोग्य व्यवहार करना, अर्थात् उसकी आज्ञा का पालन करना। मन्त्रों में **एक चेतन** परमात्मा का वर्णन है, **दूसरे चेतन** पितर लोग, कीट-पतंग, विषधर प्राणी, वृक्ष-लता-बेल आदि हैं, इनको भी नमस्कार किया गया है। नमस्कार का अर्थ है- झुकना, नमन करना, यथायोग्य व्यवहार करना। इस यथायोग्य व्यवहार को लेकर जब नमस्कार को देखेंगे तो पितर, जो चेतन हैं, उनके लिए क्या व्यवहार होगा, वह हमारे सामने आ जायेगा। कीट, पतंग, विषधर प्राणी, लता, बेल, वृक्ष आदि ये हमारे लिए कितने उपयोगी हैं, इस प्रकृति के लिए कितने उपयोगी हैं, ऐसा विचार करना और इनके उपयोग को देखकर वैसा ही इसका उपयोग करना, व्यवहार में लाना, इनके लिए नमस्कार होगा और जो जड़ पदार्थ- आदित्य, अन्न, अशनि, वर्षा है, इनको भी नमस्कार अर्थात् इनका यथायोग्य उपयोग लेना, इनसे उपकार लेना, यह इनके लिए नमस्कार होगा।

कीट, पतंग, विषधर प्राणी, वृक्ष, लता, वेल, आदित्य, अन्न, अशनि, वर्षा, इषु आदि को नमस्कार करने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि इनकी जैसे पौराणिक वर्ग पूजा करता है, वैसे नमस्कारादि करना। यह व्यवहार चेतन मनुष्यों व परमेश्वर के लिए हो सकता है, अन्य के लिए नहीं।

(ख) जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है, वह पाप-पुण्य रूप कर्म दोनों ही कर सकता है। इन्हीं पाप-पुण्य रूप कर्म के आधार पर परमेश्वर जीवों को फल देता है। वर्तमान जीवन में पिछले कर्मों के आधार पर व इस जीवन में किये पुरुषार्थ से जीव भोग भोगता है। पिछले कर्म श्रेष्ठ थे, उसके आधार पर बहुत अच्छा शरीर, परिवार, समाज आदि मिला। ये मिलने के बाद भी जीवात्मा इस जीवन में विपरीत कर्म करता हुआ दु:खी हो सकता है। भले ही पिछले कर्म अच्छे थे, किन्तु इस जीवन में उसने जघन्य पाप किये, तो वह इस जीवन व अगले जीवन में दु:ख भोगेगा।

एक बात और यहाँ कह दें कि जो कुछ हम जीवन में सुख-दु:ख भोगते हैं, वह सब हमारे कर्मों का फल नहीं होता। हाँ, यह अवश्य है कि सुख-दु:ख फल हमारे कर्मों का होता है, किन्तु सभी सुख-दु:ख हमारे कर्मों का नहीं होता। किसी अन्य व्यक्ति के कारण या प्राकृतिक आपदा के कारण भी सुख-दु:ख हो सकता है।

अब आपकी बात- जिस व्यक्ति का कर्माशय सामान्य था और इस आधार पर उसको फल भी सामान्य मिलना था, किन्तु वह व्यक्ति छल, कपट, अधर्म कर-करके बहुत धनादि अर्जित कर लेता है। उस अधर्म अर्जित धन वाले व्यक्ति को दूसरे लोग देखकर यह सोचने लग जाते हैं कि धर्म करने वाला दु:खी और यह अधर्म करने वाला सुखी है। ऐसा सोचना नासमझी है, क्योंकि धर्म का फल सदा ही श्रेष्ठ और अधर्म का फल सदा विपरीत ही होता है।

जिस व्यक्ति ने अधर्म से साधन अर्जित किये हैं, निश्चित रूप से उसको आगे जो फल मिलने वाला है, वह घोर दु:ख ही होगा। महर्षि दयानन्द ने इस विषय में मनु का श्लोक देते हुए लिखा है-

अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति।
तत: सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति।।

''जब अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़ (जैसे तालाब के बाँध तोड़, जल चारों ओर फैल जाता है वैसे) मिथ्याभाषण, कपट, पाखण्ड, अर्थात् रक्षा करने वाले वेदों का खण्डन और विश्वासघातादि कर्मों से पराये पदार्थों को लेकर प्रथम बढ़ता है, पश्चात् धनादि ऐश्वर्य से खान-पान, वस्त्र, आभूषण, यान, स्थान, मान, प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है, पश्चात् शीघ्र नष्ट हो जाता है। जैसे जड़ से काटा हुआ वृक्ष नष्ट हो जाता है, वैसे अधर्मी नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।'' सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ५, इसलिए अधर्मी को बढ़ते देख यह कभी न सोचें कि इसका जीवन अच्छा है, अपितु यह विचारें कि यह नादान परमेश्वर के न्याय को नहीं देख रहा, यह परमेश्वर के न्याय से कभी नहीं बच सकता। जो इसने छल-कपट से अर्जन किया है, उससे वह विशेष सुख तो नहीं ले पायेगा, अपितु परमात्मा के न्याय से उसने जो छल-कपट के कर्म किये हैं, उनका विशेष दु:ख अवश्य भोगेगा। अस्तु।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर आपत्तियाँ और उनका उत्तर

– राजेन्द्र जिज्ञासु

सत्यार्थ प्रकाश प्रकरण पर अब्दुल गनी व खलील खान ने जो आक्षेप किया है, उसका विवरण निम्न प्रकार है। पहली बात तो यह आक्षेप ही गलत है, क्योंकि ऋषि दयानन्द कुरान पढ़ना या अरबी भाषा जानते ही नहीं थे।

शाह रफी अहमद देहलवी के उर्दू अनुवाद का जो अन्य मौलवियों ने देवनागरी या हिन्दी में अनुवाद किया है, स्वामी जी ने उसी को ही ज्यों का त्यों लिया है। अनुभूमिका में साफ लिखा है, यदि कोई कहे कि यह अर्थ ठीक नहीं है, तो उसको उचित है कि मौलवी साहिबों के तर्जुमों का पहले खण्डन करे, पश्चात् इस विषय पर लिखे, क्योंकि यह लेख केवल मनुष्यों की उन्नति और सत्यासत्य के निर्णय के लिए है। दो लोगों ने सत्यार्थ प्रकाश के चौदह समुल्लास का सुरा तहरीम ६६ आयत १ से ५ पर ऋषि ने दो किस्सा या कहानी है लिखा।

आक्षेपकर्ता ने यह कहानो कुरान में नहीं है, ऐसा लिखा तथा कहा– जब यह कहानी नहीं है कुरान में फिर दयानन्द ने क्यों लिखा? अत: दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगना चाहिये। विरोध यही है।

इसका उत्तर है कि कुरान की आयतों के उतरने का कारण है जिसे शानेनुजूल कहा जाता है, अर्थात् किस बिना पर यह आयत उतरी? या किस आधार पर यह आयत उतरी ? वजह क्या थी? इसे शानेनुजूल कहा जाता है।

तो सुरा तहरीम का शाने नुजूल के सभी अनुवाद कर्त्ताओं ने कुरान के फुटनोट में लिखा है, वह अनुवाद उर्दू, हिन्दी व अंग्रेजी सब में है, और विस्तार में बुखारी शरीफ हदीस, व शाही मुस्लिम हदीस में प्रत्येक सुरा का शानेनुजूल लिखा है।

अत: इन आयतों में स्वामी जी ने दो कहानी है लिखा है, परन्तु कहानी को स्वामी जी ने उद्धृत नहीं किया, मैं उन दोनों कहानी को लिखता हूँ उम्मूल मोमेनीन (मुसलमानों की मातायें) अर्थात् हजरत मुहम्मद स:आ:व:स: की सभी बीबीयाँ, सभी मुसलमानों की मातायें हैं, विधवा होने पर भी वह किसी से निकाह नहीं कर सकतीं, और न कोई मुसलमान उनसे निकाह कर सकता, क्योंकि माँ जो ठहरीं। हजरत जैनब नाभी बीवी के पास हजरत साहब शहद पीने को जाया करते थे। हुजूर की सबसे कमसिन पत्नी हजरत आयशा ने एक और पत्नी हजरत हफसा दोनों ने परामर्श कर पति हजरत मुहम्मद साहब से कहा कि दहन मुबारक से मगाफीर की बू आती है, चुनान्चे आपने क्या खाया?

जवाब में हुजूर ने कहा– अगर शहद पीने से बू आती है, तो आइन्दा मैं शहद का इस्तेमाल नहीं करुँगा। पहली कहानी यह है, और आयत का शानेनुजूल यह है। (मैंने कसम खाली है, तुम किसी से मत कहना)

दूसरी कहानी है कि हजरत साहब ने एक काम को न करने की कसम खा लिया तो अल्लाह ने यह आयत उतारी– ऐ नबी क्यों हराम करते हो उस चीज को? जिसे अल्लाह ने हलाल किया है तुम्हारे लिए, अपनी बीविओं के खुशनुदियों के लिए (प्रसन्न के लिए)। हजरत हफसा के घर गए, वह मईके गई भी तो हुजूर ने मारिया, कनीज, के साथ एखतलात किया, हफसा ने दोनों को कमरे में देख लिया– हुजूर ने कसम खाली थी न करने को। तफसीर हक्कानी – पृ.१२५

एक बार हजरत साहब ने एक पत्नी हफसा से कहा, दूसरों से कहने को मना किया पर हजरत हफसा ने हजरत आयशा नामी पत्नी से कह दी । जिस पर अल्लाह ने पत्नियों को डाँट लगाते हुए कहा कि नबी अगर तुम लोगों को तलाक दें, तो उनकी पत्नियों की कमी नहीं, जिसे कुरान में अल्लाह ने कहा।

असा रब्बुहू इन तल्लाका 'कुन्ना अई' युब दिलाहू अजवाजन खैरम मिन कुन्ना मुसलिमातिम मुमिनातिन, कानेतातिन, तायेनातिन, सायेहातिन, सईये बातिय वा अबकरा। तहरीम – आ. ५

इन दो कहानी का ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में उल्लेख किया है, जो कुरान तथा हदीस में आयत का शानेनुजूल ही इस प्रकार है।

कुरान का अंग्रेजी अनुवादक पिक्थल व एन.जे. दाऊद, हिन्दी अनुवाद नवल किशोर ने भी लिखा है तथा उर्दू

अनुवादकों ने भी लिखा है। अवश्य यह लिखना मैं युक्ति-युक्त समझता हूँ उर्दू अनुवादक ने लिखा यह किस्सा पादरियों ने अपने मन से मिला दिया है।

विचारणीय बात है कि ऋषि दयानन्द ने इसी आयत की समीक्षा में लिखा है, अल्लाह क्या ठहरा मुहम्मद साहब के घर व बाहर का इन्तेजाम करने वाले मुलाजिम ठहरा?

जरा सोचे तो सही कि कुरान का अल्लाह समग्र मानव मात्र का होने हेतु मानव मात्र के लिए उपदेश होना था कुरान का उपदेश।

किन्तु मानव मात्र का उपदेश तो क्या है, नबी के पति-पत्नी का घरेलू वार्तालाप ही अल्लाह.का उपदेश है। समग्र कुरान में इस प्रकार अनेक घटनाएँ हैं। यहाँ तक कि नबी पत्नी बदचलन है या नहीं हैं, कुरान में अल्लाह गवाही दे रहे हैं। सुरा नूर-२४ आयत ६ पर देखें।

वल्लजीना यरमूना अजवाजहुम व लम या कुल्लहुम शुहदाऊ इल्ला अन फुसुहुम फ शहादतो अहादेहिम अरबयो शहादतिम बिल्ला हे इन्नाहू लम्स्सिादेकीन।

अब समीक्षा में ऋषि दयानन्द जी ने अपना विचार ही तो अभिव्यक्त किया है, न कि कुरान में यह क्यों लिखा है, यह पूछा?

अपने विचार अभिव्यक्त करने की छूट भारतीय संविधान में सबको है, और मानव बुद्धि परख होने हेतु किसी चीज को मानने के लिए बुद्धि का प्रयोग तो करना ही चाहिये। दयानन्द तो दोषी तब होते, जब अपनी मनमानी बातों को कुरान की आयतों के साथ मिलाते? उन्होंने तो मात्र कुरान की बातों को सामने रखा।

आक्षेप कर्ता ने सुरा कदर जो संख्या ९७ है आयत १ से ४ को लिखा है, तथा सत्यार्थ प्रकाश पर आक्षेप किया है, कुरान में क्या कहा वह प्रथम प्रस्तुत करता हूँ।

तहकीक नाजिल किया हमने कुरान को बीच रात कदर के, और क्या जाने तू के क्या है रात कदर की, रात कदर की बेहतर है, हजार महिने से, उतरते हैं फरिश्ते और रूह पाक अपने परवार दिगार के हुक्म से, हजार चीजों को लेकर अपने वास्ते, सलामती है वह तुलुय हो फजर। आक्षेप कर्ता को चाहिये था, दयानन्द को गम्भीरता से पढ़कर कुरान में सभी प्रश्नों को जानने का प्रयत्न करना, क्योंकि दयानन्द ने जो प्रश्न किया है, कुरान से उसका जवाब कुरानविदों के पास नहीं है।

कुरान में कई जगह कहा गया कि कुरान को बरकत वाली रात में उतारा, यहाँ तक कि उल्लहा ने कसम खाकर कहा। एक रात में कुरान को उतारा, किन्तु पूरी कुरान की आयतों को दो भागों में बाँटा गया, मक्की व मदनी में, अर्थात् प्रत्येक सुरा के प्रथम में लिखा है कि यह सुरा मक्का में और यह मदीना में उतारी गई आदि। दयानन्द का कहना सही है कि समग्र कुरान एक ही बार में उतरी? या कालान्तर में? क्योंकि इसका विरोध कुरान से ही होता है।

जो पवित्र आत्मा हजरत जिब्राइल को उतरना इस आयत में माना गया जो ऋषि ने वह पवित्र आत्मा कौन है लिखा, अल्लाह तक पहुँचने में जिब्राइल को पचास हजार साल लगते हैं, तो कुरान को उतरने में कितने वर्ष लगे?

सत्यार्थ प्रकाश पर आक्षेप कर्ताओं ने सुरा बकर-संख्या २ आयत २५ से ३७ तक का उल्लेख किया है।

सुरा बकर आयत २५ में लिखा- बशारत हैं उनके लिए जो नेक अमल करेंगे, अल्लाह उनको जन्नत में दाखिल करायेंगे, जिसके नीचे नहरे हैं, तरह-तरह के मेवे खाने को मिलेंगे, मेवे (फल) देखने में एक जैसा होगा पर स्वाद अलग-अलग है। खिलाने वाला कहेगा- अरे इसे खाकर देखें इसका स्वाद ही अलग है और वहाँ हुर गिलमों, पवित्र शराब तथा परिन्दों का गोश्त का कबाब भी खाने को मिलेगा, यह प्रमाण पूरी कुरान में अनेक बार आया है। यहाँ तक कि हम उमर औरतें, दिल बहलाने वाली औरतें, बड़ी-बड़ी आँख वाली जैसे मोती का अण्डा, रेशम का कपड़ा पहनकर जिससे तन दिखाई दे सोने के कंगन पहन कर सामान परिवेशन करेंगी- बहुत जगह कुरान में लिखा है।

ऋषि दयानन्द जी ने मात्र जानकारी लेनी चाही कि दुनिया में स्त्री, पुरुष जन्म लेते व मरते हैं, पर जन्नत में रहने वाली सुन्दर स्त्रियाँ अगर सदाकाल वहाँ रहती हैं? तो क्या वह एक जगह रहते -रहते ऊब नहीं जाती होंगी? जब तक कयामत की रात नहीं आवेगी, तब तक उन बिचारियों के दिन कैसे कटते होंगे?

मेरे विचारों से सत्यार्थ प्रकाश में दर्शाये गए इन्हीं प्रश्नों को तीस हजारी कोर्ट से न पूछ कर उस्मानगनी व खलील खान को चाहिये था- डॉ. मुफ्ति मुकररम से ही पूछते। अब मुफ्ति साहब ने इन लोगों को जवाब देने के बजाय सुझाव दे डाला- कोर्ट में जा कर पूछो कि दयानन्द ने

सत्यार्थ प्रकाश में यह क्यों लिखा?

किन्तु दयानन्द ने जो कुछ भी लिखा है, वह कुरान में पहले से ही मौजूद है। अगर कुरान में यह बात न होती तो ऋषि दयानन्द यह न पूछते कि उन सुन्दरी स्त्रियों का एक जगह रहने में मन में घबराहट होती या नहीं? जवाब तो कुरान विचारकों को देना चाहिये। सुरा बकर-आयत ३१ से ३७ में सत्यार्थ प्रकाश पर जो आरोप है, वह भी निराधार है। अल्लाह ने आदम को सभी चीजों का नाम बता दिया, और फरिश्तों से पूछा कि अगर तुम सच बोलने वाले हो, तो उन चीजों का नाम बताओ। पर वह तो सच बोलने वाले ही थे, तो कहा हम तो उतना ही जानते हैं जितना तू ने हमें सिखाया।

इतने में अल्लाह ने आदम से पूछा, तो वह सभी नाम बता दिया। फिर अल्लाह ने कहा- हम बता नहीं रहे थे तुम्हें? जाव इन्हें सिजदा करो।

सत्यार्थ प्रकाश में लिखा- ऐसे फरिश्तों को धोखा दे कर अपनी बड़ाई करना खुदा का काम हो सकता है?

इसमें दयानन्द की क्या गलती? अल्लाह ने कुरान में कहा, व अल्ला मा आदमल असमा आ कुल्लाहा सुम्मा अराजा हुम अललमल इकते।

दयानन्द का कहना है कि जिस फरिश्ते ने आसमानों, और जमीनों में अल्लाह की इतनी इबादत की, अल्लाह ने जिसे आबिद, जाबिद, शाकिर, सालेह, खाशेय आदि नामों की उपाधि दी, और चीजों का नाम नहीं बताया, अब उसी की लाई गई मिट्टी से आदम को बनाकर सभी नाम बताना? क्या यह अल्लाह का धोखा नहीं?

क्या यह अल्लाह का पक्षपात नहीं? मात्र दयानन्द ही क्यों, कोई भी बुद्धि परख मानव इसे दगा ही मानेगा। क्या यह अल्लाह का काम हो सकता है?

अवश्य कुरान में इसकी चर्चा और भी कई जगहों पर हैं, जैसा संख्या ७ अयराफ में १२ से १९ तक लिखा है, और यहाँ तो उस फरिश्ते ने अल्लाह के सामने अंगुली नचा कर कहा, काला फबिमा अगवई तनी ला अकयूदन्नालहुम सिरातकल मुस्ताकीम-गुमराह किया तू ने मुझको, मैं भी उसे गुमराह करूँगा जो तेरे सीधे रास्ते पर होगा उसे आगे से पीछे से, दाँई और बाँई से उसे गुमराह करूँगा।

अब देखें अल्लाह ने उस शैतान को रोक नहीं पाया, और कहा- जो मेरे रास्ते पर होगा उसे तू गुमराह नहीं कर पायगा। शैतान ने कहा- मैं उसे ही गुमराह करूँगा जो तेरे रास्ते पर होगा, और आदम को गुमराह कर दिखाया।

यह सभी बातें कुरान में ही मौजूद है कि अल्लाह अगर शैतान के पास निरुत्तर हो और कोई मानव अपनी अकल पर ताला डाल कर सत्य बचन महाराज कहे तो इसमें ऋषि दयानन्द की क्या गलती है?

सुरा-२ आयत ३७ पर जो आक्षेप है वह देखें, अल्लाह ने कहा- आदम तुम अपने जोरू के साथ वाहिश्त में रहो जहाँ मर्जी, जो मर्जी खाब पर नाजिदीक न जाव उस दरख्त के गुनहगार हो जावगे, और निकाल दिये जावगे यहाँ से- व कुलना या आदमुस्कुन अनता व जाब जुकल जन्नाता आदि

अब ऋषि दयानन्द ने जो लिखा- देखिये, खुदा की अल्पज्ञता! अभी तो स्वर्ग में रहने को दिया और फिर उसे कहा निकलो, क्या खुदा नहीं जानता था कि आदम मेरा आदेश का उल्लंघन कर उसी फल को खायेगा, जिसे मैंने मना किया? स्वामी जी ने आगे लिखा कि जिस वृक्ष के फल को आदम को खाने से मना किया, आखिर अल्लाह ने उसे बनाया किसके लिए था? यह सभी प्रश्न तो दयानन्द का है, पर उल्टा दयानन्द के अनुयाइयों से पूछा जा रहा है कि दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में क्यों लिखा? यहाँ तो उल्टी गंगा बह रही है।

जहाँ तक अल्लाह की अल्पज्ञता की बात है, वह तो कुरान से ही सिद्ध हो रही है, अल्लाह को पता नहीं था कि शैतान आदम को बहका देगा तथा शैतान हमारे हुकम का ताबेदार नहीं रहेगा आदि। दूसरी बात है कि अल्लाह ने आदम को बताया कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है, उसके बहकावे में मत आना।

और इधर शैतान को वर दे दिया कयामत के दिन तक जिन्दा रहने का, हर मानव के नस, नाड़ी तक पहुँचने का, व सीधे रास्ते पर चलने वालों को गुमराह (पथभ्रष्ट) करने का, अल्लाह ने ही मुहल्लत दी। ऋषि दयानन्द को इसीलिए लिखना पड़ा- यह काम अल्लाह का नहीं, और न ही यह उसकी ग्रन्थ की हो सकती है।

यहाँ अल्लाह ने चोर को चोरी करने व गृहस्थ को सतर्क रहने वाली बात की है। इसका प्रमाण भी कुरान के दो स्थानों पर मौजूद है, जैसा-सुरा इमरान आयत ५४ तथा अनफाल-आ०३०- व मकारू व मकाराल्लाहू बल्लाहू खैरुल

मारेकीन।

अर्थ- मकर करते हैं वह, और मकर करता हूँ मैं, और मैं अच्छा मकर करने वाला हूँ। ध्यान देने योग्य बात है कि मकर का अर्थ है धोखा और अल्लाह से अच्छा धोखा करने वाला कोई नहीं, जो अल्लाह खुद कर रहे हैं अपनी कलाम में, अब अल्लाह व अल्लाह की कलाम की दशा क्या होगी? ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में यही तो जानकारी इस्लाम के शिक्षाविदों से लेना चाह रहे हैं। अब प्रश्नों का जवाब देने के बजाय कोई कहे कि सत्यार्थ प्रकाश में क्यों लिखा,उसका तो ईश्वर ही मालिक है। एक बात और भी जानने की है, ऊपर लिख आया हूँ शानेनुजूल को, कि आयत उतारने का कारण क्या है। इसका मतलब भी यह निकला- अल्लाह सर्वज्ञ नहीं है, जो ऋषि ने अनभिज्ञ लिखा है। अगर कारण नहीं होता, तो अल्लाह आयत नहीं उतरते। कारण हो सकता है, यह ज्ञान कारण से पहले अल्लाह को नहीं था।

कुरान में ही अल्लाह ने कहा- ला तकर बुस्सलाता व अनतुम सुकाराआ। अर्थ- न पढ़ो नमाज जब कि तुम शराब की नशे में हो।

अर्थात् शराब पीकर नमाज नही पढ़नी चाहिये।

अब इसका शाने नुजूल देखें, एक सहाबी (मुहम्मद साहब का साथी) शराब पीकर नमाज पढ़ा रहे थे, नशे की दशा में कुरान की आयतों को पढ़ने का क्रम भंग किया, तो दूसरे ने हजरत से शिकायत की, तो अल्लाह ने यह आयात जिब्राइल के माध्यम से उतारी।

यह आयत उतरते ही सभी अरबवासी जो घर-घर शराब बनाते थे, सब ने शराब बहादी नालाओं में शराब बहने लगा, आदि।

इससे यह पता चला कि शराब पीने से नशा होता है, यह ज्ञान अल्लाह को नहीं था वरना शराब तो प्रथम से ही हराम होना था? अगर वह सहाबी कुरान पढ़ने का क्रम नशा में भंग न करते, तो अल्लाह को यह आयत उतारना ही नहीं पड़ता।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में यही तर्क पूर्ण बातें की हैं, अगर कोई अक्ल में दखल न दे, या अक्ल में ताला डालना चाहे तो ऋषि दयानन्द की क्या गलती है? दयानन्द ने साफ कहा है कि हठ और दुराग्रह को छोड़ मानव मात्र का भलाई जिससे हो, सत्य के खातिर काम करना चाहिये, मानव बुद्धि परख होने हेतु प्रत्येक कार्य को बुद्धि से करना चाहिये, क्योंकि इसी का ही नाम मानवता है। सुरा २ आयत ८७ को अगर ध्यान से पढ़ते तो शायद आक्षेप न कर पाते, क्योंकि सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि दयानन्द ने कुरान में कही गई बातों को ज्ञान विरुद्ध तथा सृष्टि नियम विरुद्ध सिद्ध किया है। हजरत मूसा को अल्लाह ने अगर किताब दी, उसमें क्या कमी थी जो पुन: ईसा को अलग किताब देनी पड़ी? उससे पहले दाऊद को भी किताब दी थी, उसमें कौन-सी बातों को अल्लाह कहना भूल गये थे, जो अन्तिम में कुरान के रूप में हजरत मुहम्मद को अल्लाह ने दिया?

अल्लाह का ज्ञान पूर्ण है अथवा अधूरा? क्योंकि परमात्मा का ज्ञान पूर्ण होना आवश्यक है और सार्वकालिक, सार्वदेशिक, सार्वभौमिक होना चाहिये। कुरान इसमें खरा नहीं उतरता। हजरत मूसा ने मौजिजा दिखाया और नबिओं ने भी मौजिजा दिखाया, मौजिजा का अर्थ है चमत्कार। अगर चमत्कार तब होते थे, तो अब क्यों नहीं?

अगर चमत्कार से हजरत मरियम कुँवारी अवस्था में हजरत ईसा को जन्म देना मान लिया जाय, तो क्या सृष्टि नियम विरुद्ध नहीं होगा? कोई मेडिकल साइंस का जानने वाला इसे सही ठहरा सकता है? इसे अल्लाह ने सुरा अम्बिया-आयत-८८ में क्या कहा, देखें- वल्लाति अहसनत फरजहा फनाफखना फीहा मिर रूहिना वज अलनाहा वबनहा

- कि अल्लाह ने मरियम के शर्मगाह (गुप्तइन्द्रियों) में फूँक मार दिया और मरियम गर्भवती हो गई।

कोई भी बुद्धिमान इस बात को ईश्वरीय ज्ञान तथा ईश्वरीय कार्य कैसे मान सकते हैं? ऋषि दयानन्द ने लिखा है, भोले-भाले लोगों को बहकाया गया है।

अगर ऋषि दयानन्द अपने कार्यकाल में इस पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को न लिखते, तो आर्य जाति को बचने का रास्ता बन्द था। सारा भारत कुरान का मानने वाला बन जाता, या बलात् बना दिया जाता। दयानन्द का बहुत बड़ा उपकार है इस पुस्तक को लिखने का।

गुरुदत्त विद्यार्थी ने कहा- अगर सारी सम्पत्ति बेचकर भी सत्यार्थ प्रकाश खरीदना पढ़े तो भी इसका मूल्य कम है। मैं इसे अवश्य खरीदता।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

भयानक षडयन्त्र

- राजन स्वामी

यद्यपि महाभारत काल के पश्चात् वैदिक शैक्षणिक व्यवस्था के मूल स्वरूप में विकृति प्रारम्भ हो गई थी। जिसके परिणाम स्वरूप वाम मार्ग का अभ्युदय होने से नैतिक मूल्यों और संस्कृत के प्रसार में ह्रास होता गया किन्तु मुगल शासन के प्रारम्भ होते ही द्वेषवश संस्कृत भाषा को मिटा देने का कुचक्र प्रारम्भ हो गया। इसी कड़ी में अनेक विश्वविद्यालय, पुस्तकालयों तथा पाठशालाओं को नष्ट कर दिया गया।

किन्तु आज स्थिति उससे भी अधिक भयावह है। भारत में मतान्तरण का सपना संजोये मुस्लिम एवं क्रिश्चियन मिशनरियों ने यह धारणा ही बना ली है कि जब तक संस्कृत भाषा रहेगी तबतक भारतीय संस्कृति को मिटाया नहीं जा सकता।

एक नियोजित षड्यन्त्र के अन्तर्गत संस्कृत को मृत भाषा घोषित करने का प्रयास किया जा रहा है। वैदिक (हिन्दू) धर्म के सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में हैं। यदि विश्व की प्राचीनतम एवं वैज्ञानिक भाषा का ही अस्तित्व नहीं रहेगा तो हिन्दू धर्मग्रन्थों की स्थिति क्या होगी? इसे सहज ही समझा जा सकता है।

यह दुर्भाग्य का विषय है कि उत्तर प्रदेश की वर्तमान अखिलेश सरकार ने अरबी फारसी के विकास के लिए ५५६ करोड़ की राशि इस वर्ष के बजट में निर्धारित की है, जबकि संस्कृत भाषा के लिए एक रुपया भी बजट में नहीं रखा गया है। प्रश्न यह है कि क्या अरबी-फारसी भारत की मूल भाषा है या अरब ईरान (फारस) की भाषा है? संस्कृत भाषा को इतनी घृणा की दृष्टि से देखने का औचित्य क्या है? विगत १२ वर्षों में एक भी गुरुकुल या संस्कृत विद्यालय को मान्यता तक नहीं मिली है, जबकि इसी अन्तराल में सरकारी खजाने से लखनऊ-मलीहाबाद रोड पर भव्य अरबी फारसी विश्वविद्यालय का निर्माण हुआ है। यह तब है जब देश में पहले से ही अरबी-फारसी के कई विश्वविद्यालय मौजूद हैं। अकेले सहारनपुर मण्डल में ४२ मदरसे हैं। इन मदरसों में धार्मिक समभाव एवं विज्ञान की कैसी शिक्षा दी जाती है, यह किसी से छिपा नहीं है। अल्पसंख्यक तुष्टिकरण के लिये सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से प्रथमा, मध्यमा तथा उत्तर मध्यमा को मिलने वाली मान्यता पर रोक लगा दी गई। कहा गया कि इसके लिये संस्कृत शिक्षा बोर्ड का गठन किया जायेगा। मुलायम एवं मायावती सरकार में लगभग ८ वर्ष बीतने के पश्चात् कुछ माह पूर्व संस्कृत विद्यालयों के लिये संस्कृत शिक्षा बोर्ड का गठन अवश्य हुआ है, किन्तु गुरुकुलों को मान्यता देने की प्रवृत्ति अभी भी देखने में नहीं आ रही है। जब संस्कृत के लिये अखिलेश सरकार के पास एक रुपया भी नहीं है तो मान्यता ही कैसे मिल सकती है? जब सी.बी.एस.ई बोर्ड में उत्तर मध्यमा (इण्टर) से संस्कृत हटा दी गयी है तो स्नातक की परीक्षा कैसे दी जा सकती है? इस देश का यह दुर्भाग्य है कि यहाँ लगभग सभी प्रान्तों में अंग्रेजी को किसी न किसी रूप में अनिवार्य बनाया गया है तथा फ्रेंच, जर्मन एवं अन्य भाषाओं के शिक्षण में काफी राजकीय सहायता दी जा रही है, किन्तु हिन्दी सहित भारत की सभी भाषाओं एवं विश्व की सभी भाषाओं की जन्मदात्री वैदिक संस्कृत को ही समाप्त करने का जो दुष्प्रयास हो रहा है, वह अवांछनीय है तथा देश के बुद्धिजीवी वर्ग को इस विषय पर गहन-चिन्तन करने की आवश्यकता है कि इसका दुष्परिणाम क्या होगा?

- सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

पृष्ठ संख्या ७ का शेष भाग....

इस कार्य को करने वाली संस्था बामसेफ, जिसका पूरा नाम **ऑल इण्डियन बैकवर्ड एंड माइनॉरिटीज एम्प्लाइज फैडरेशन है**, जिसका निर्माण बहुजन समाजवादी पार्टी के संस्थापक कांशीराम और डी.के. खापडे ने अमरीकी सहायता से १९७३ में किया था। इसका उद्देश्य आरक्षण का लाभ उठाकर भारतीय समाज में सवर्ण-असवर्ण की खाई को गहरी करना और समाज में विघटन के बीज बोना था। सामाजिक लोगों को अभी तक इसका विशेष परिचय नहीं है। जो परिचित भी हैं, वे इनके कार्य को विशेष महत्त्व नहीं देते, परन्तु खडगे ने संसद में बता दिया, यह विचार समाज में तेजी से घर कर रहा है। समाज और सरकार को इसका निराकरण करने के लिये सक्रिय होना होगा।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि एक आर्य के अतिरिक्त अपने देश के लिये इतने सुन्दर शब्दों का प्रयोग कोई कर सकता है, जैसा राम ने किया था। राम ने कहा- **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।** इतना ही नहीं, आर्यों ने अपने भारतवर्ष को देवताओं के लिये भी ईर्ष्या का कारण बताया-

गायन्ति देवाः किल गितकानि
धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे
स्वर्गापवर्गास्पद मार्गभूते
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।

- धर्मवीर

स्तुता मया वरदा वेदमाता-२४

उदसौ सूर्यो अगादुदयं मामको भगः।
अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहिः।।

- ऋक्. १०/१५९/१

वैदिक धर्म और संस्कृति श्रेष्ठतम विचार है। वैदिक धर्म और संस्कृति के सम्बन्ध में विचार करते हुए, यदि हम एक बात का स्मरण रखें तो हमारे चिन्तन में दोष आने की सम्भावना समाप्त हो जाती है। वैदिक धर्म का मूलवेद है। वेद में सिद्धान्त प्रतिपादित है और जानने-मानने वाले को, उस विचार को व्यवहार में लाना होता है, उसपर आचरण करना होता है। हम कितना भी अच्छा क्यों न सोचते हों, हमारी अल्पशक्ति, अल्पबुद्धि कुछ-न-कुछ अनुचित कर बैठती है। यदि मनुष्य के पास पूर्ण ज्ञान और सामर्थ्य होता तो संसार में न तो ईश्वर की आवश्यकता होती और न ही संसार की। मनुष्य की अल्पज्ञता ही संसार और ईश्वर की आवश्यकता की प्रतिपादक है। अल्प और सर्व एक सापेक्ष शब्द हैं, एक शब्द के अभाव में दूसरे शब्द की कोई उपयोगिता नहीं बचती। मनुष्य अल्पज्ञ है, अतः सिद्ध है कि कोई सर्वज्ञ है। इसी प्रकार यदि कोई सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान सर्वत्र है, तो वह एक ही होगा। इसमें विकल्प की कल्पना ही अनेकत्व का कारण बनेगी। ज्ञान का प्रवाह अधिक से कम की ओर होगा, अतः सर्वज्ञ परमेश्वर से अल्पज्ञ मनुष्य की ओर ज्ञान की गति स्वाभाविक है।

इस प्रकार ईश्वर एक है, सबको ज्ञान, सामर्थ्य, ऐश्वर्य का देने वाला है, तो उसके ज्ञान के देने में अन्याय या पक्षपात की बात कैसे सम्भव है। संसार में मनुष्यों को, प्राणियों को देखकर हमें ऐसा लगता है, जैसे परमेश्वर सबको अलग-अलग देकर अन्याय कर रहा है, परन्तु हम भूल जाते हैं कि देने वाला एक है, उसका देने का प्रकार भी एक ही होगा, अन्तर तो भिन्नता की ओर से होता है, प्राप्त करने वाले मनुष्य पृथक् हैं, अतः देने वाले के दृष्टि में सब एक हैं, परन्तु लेने वाले भिन्न और अनेक हैं, अतः ग्रहण करने के सामर्थ्य में भिन्नता दिखती है।

इतना मान लेने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर द्वारा सबके साथ समान व्यवहार ही हो रहा है, फिर चाहे स्त्री हो, पुरुष हो या कुछ और भी हो, जैसे ईश्वर की सत्ता सर्वत्र है, उसका अनुभव जड़ को तो नहीं होता, चेतन को होता है, उसी प्रकार एक चेतन उसकी सत्ता को अपने ज्ञान और योग्यता के अनुसार ही देख पाता है, अनुभव कर सकता है, दूसरा ज्ञान के अभाव से ऐसा करने में समर्थ नहीं हो पाता। यह अन्तर संसार में देखने में आता है, संसार का सारा व्यापार व्यक्तिपरक है, परमेश्वर सबको यथावत जानता है, अतः सबको उचित ज्ञान और सामर्थ्य देता है। आज इस मनुष्य संसार में स्त्री-पुरुष को लेकर जो जैसा व्यवहार दिखाई दे रहा है, वह सारा मनुष्य बुद्धि का परिणाम है। परमेश्वर सभी मनुष्यों का कल्याण चाहता है। और उनका उपकार करता है। जिस प्रकार एक माता-पिता अपने पुत्र और पुत्री का समान हित चाहते हैं। उसी प्रकार स्त्री पुरुष भी परमेश्वर की पुत्र-पुत्रियाँ हैं वह उनमें भेद और पक्षपात कैसे कर सकता है?

इस सूक्त के मन्त्रों से इस बात को भली प्रकार समझा जा सकता है। यह सूक्त शची पौलीमी कहलाता है, इसका देवता भी यही है, इसका ऋषि भी यही है। यदि कहने वाला किसी बात को कहता है तो कहने वाले को हम ऋषि कहते हैं और कही जाने वाली बात को देवता । ऋषि कभी स्वयं ईश्वर है कभी उसके ज्ञान का कोई प्रवक्ता। ये शब्द ईश्वर और उसके ज्ञान से सम्बन्ध रखते हैं अतः यदि मनुष्य के साथ इनको जोड़कर देखेंगे तो अर्थ की संगति नहीं लग पायेगी अतः शब्द को उसके अर्थ की ओर इंगित करने देते हैं तो हमें अर्थ सरलता से समझ में आ जाता है तथा उसकी संगति भी ठीक लग जाती है। इस सूक्त में एक स्त्री का व्यक्तित्व कैसा होना चाहिए इस बात को समझाया गया है। इस विवरण को व्यक्ति विशेष का वक्तव्य न मानकर स्त्री सामन्य का वक्तव्य मानना उचित होगा। इस विचार से मन्त्र में बताया गया विचार समाज की सभी स्त्रियों का होगा।

वेद उत्साह और आशा की प्रेरणा देता है। वेद में निराशा, पराजय, उदासी की बात नहीं है, यही बात इस सूक्त के मन्त्रों में भी दिखाई देती है। मन्त्र में कहा गया **उदसौ सूर्यो अगात्** मनुष्य का उत्साह सूर्य के उदय के साथ आगे बढ़ता है, प्रकृति का वातावरण मनुष्य के लिये उत्साह और आनन्द प्राप्त कराता है। प्रत्येक मनुष्य संसार में अपनी भूमिका में स्वयं सुख का अनुभव करता है। और अपने साथ वालों को भी आनन्दित करता है।

क्रमशः ....

संस्था - समाचार

१५ से ३० नवम्बर २०१५

यज्ञ एवं प्रवचन - जैसा कि विदित है ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रातःकाल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द द्वारा रचित आर्योद्देश्यरत्नमाला नामक लघु ग्रन्थ का स्वाध्याय कराया जाता है।

प्रातः कालीन सत्संग में ऋग्वेद के वागाम्भृणी सूक्त के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए **डॉ. धर्मवीर जी** ने कहा कि इस सूक्त में सबसे बड़े जिससे बड़ा कोई नहीं, उस परमात्मा की वाणी अर्थात् ज्ञान का वर्णन है। उसकी वाणी सब ओर फैली हुई है। इस संसार की विविध प्राकृतिक वस्तुओं को देखने, सुनने, सूँघने, चखने, छूने से ईश्वर की रचना करने की विद्या और सामर्थ्य का ज्ञान होता है। कोई चाहे कितना ही बड़ा विद्वान् हो, वह ईश्वर के ज्ञान की तुलना में बहुत कम जानता है। हमारे कम ज्ञान का पता तब लगता है, जब हमसे बड़ा विद्वान् हमारे निकट आता है या हम उनके निकट जाते हैं, इसलिये किसी को अहंकार नहीं करना चाहिये। अहंकारी व्यक्ति अपने को सर्वज्ञ मानता है, जबकि वह स्वयं के साथ घटित होने वाले भविष्य की बातों को नहीं जानता। ज्ञान का अभिमान करने वाले अन्य सभी को अज्ञानी मानते हैं। ज्ञान की अधिकता के कारण बहुत से लोग नास्तिक हो जाते हैं और ईश्वर को भी नहीं मानते। संसार में जो कुछ ऐश्वर्य दिखाई देता है, वह सब ईश्वर का ही है। उसमें ही सब पदार्थों के निर्माण का सामर्थ्य है।

प्रातःकालीन सत्संग में ऋग्वेद के तीसरे मण्डल के ५४ वें सूक्त के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि वे ही मनुष्य प्रशंसा के योग्य और प्रसिद्ध होते हैं, जो धर्म और अधर्म के विचार के लिए उत्तम बुद्धि सबको देते हैं। आत्मा की दृष्टि से, मुक्ति की दृष्टि से धर्म और अधर्म का निर्णय हो सके ऐसी बुद्धि देने वाले सबसे अधिक प्रशंसनीय है। उपदेश का ग्रहण तभी हो सकता है, जब उपदेशक मित्रभाव से बोलता है। केवल भाषण देने से कोई मनुष्य किसी को प्रभावित नहीं कर पाता। समय और आवश्यकता का विचार करके ही उपदेश करना चाहिए। श्रोता के ज्ञान और बुद्धि के अनुकूल ही उपदेश करना चाहिये। सत्य और असत्य का विचार करके अपने आत्मा के समान प्रिय समझकर बोलें, तभी वह प्रशंसा के योग्य होता है। उपदेश केवल सूचना या जानकारी देना नहीं होताहै, किन्तु आचरण में लाया जा सके इस प्रकार का उपदेश होना चाहिये। धार्मिक विद्वानों को ही उपदेश करने का अधिकार होना चाहिये। स्वतन्त्रता के नाम पर किसी को भी उपदेशक नहीं बनने देना चाहिये। धर्म का उपदेश देने वाले आचार्यों, विद्वानों और संन्यासियों की योग्यता का निर्धारण धर्मार्य-सभा ही कर सकती है। उपदेश करने का उद्देश्य केवल आजीविका कमाना नहीं है, बल्कि मनुष्यों को धर्मात्मा बनाना है।

३० नवम्बर सोमवार को प्रातःकाल यज्ञोपरान्त अजमेर निवासी स्व. श्री भगवान सहाय जी के विषय में आचार्य जी ने बताया कि वे महर्षि दयानन्द के बताये रास्ते पर आजीवन चलते रहे। परोपकारिणी सभा का कार्य करने में तन, मन, धन से सदा अग्रणी रहते थे। ऋषि उद्यान में आने वाले सभी विद्वानों, सन्यासियों, ब्रह्मचारियों, तपस्वियों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। **स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक व स्वामी सत्यपति जी** के अजमेर रहने के काल में आपने उनकी बहुत सेवा की।

अजमेर के प्रसिद्ध वैद्य स्व. श्री ब्रह्मानन्द त्रिपाठी के पोते **श्री अनिमेष त्रिपाठी** का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। वे सपरिवार ऋषि उद्यान आये और यज्ञ में परिवार के सभी सदस्यों ने अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान की। इस अवसर पर आचार्य जी ने कहा कि यज्ञोपवीत यज्ञ के समीप जाने, विद्या आरम्भ करने, वेद पढ़ने का प्रतीक है। मनुष्य के आत्मा को ज्ञान के समान पवित्र करने वाला संसार में अन्य कोई साधन नहीं है। यह यज्ञोपवीनत हमें माता-पिता, गुरु तथा ऋषियों के प्रति कर्त्तव्यपालन की याद दिलाता है। यह वेद और संस्कृत से जोड़कर रखता है। यह परिवार वैद्य जी के समय से ही ऋषि उद्यान से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। वैद्य जी श्रावणी पर्व के दिन ऋषि-उद्यान आकर संस्कृत में धारावाहिक व्याख्यान देते थे। आचार्य जी ने श्री अनिमेष जी को अपने पूर्वजों की परम्परा बनाए रखने के लिए संस्कृत और वेद का अध्ययन व स्वाध्याय करने को प्रेरित किया।

सायंकालीन सत्संग में आर्योद्देश्यरत्नमाला के प्रमाण और प्रमेयों की व्याख्या करते हुए **उपाचार्य सत्येन्द्र** जी ने कहा कि प्रमेय वह है जो प्रमाणों से जाना जाता है। जीवात्मा मन से और मन इन्द्रियों से जुड़कर ठीक ज्ञान प्राप्त करता है। आँख, कान आदि इन्द्रियाँ प्रमाण हैं और रूपादि विषय प्रमेय हैं। जैसे आँख का प्रमेय रूप है, इसी प्रकार आँख से देखकर, कान से सुनकर, नाक से सूँघकर, जीभ से चखकर तथा त्वचा से स्पर्श कर जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह सब प्रत्यक्ष कहलाता है। अनुमान के विषय में बताया कि उसको अनुमान कहते हैं। जैसे धूएँ को देखकर अग्नि का ज्ञान होता है, बादल को देखकर वर्षा का अनुमान होता है। किसी रचना को देखकर उसके रचनाकार का ज्ञान होता है। अनुमान तीन प्रकार के होते हैं। पूर्ववत्, शेषवत् और सामान्य।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि मेले में प्रतिवर्ष वैदिक धर्म और संस्कृति को देश-देशान्तर में फैलाने हेतु अनेक विद्वानों, कार्यकर्त्ताओं को पुरस्कार दिया जाता है। पुरस्कार के रूप में अभिनन्दन पत्र, नगद राशि, शॉल, प्रतीक चिह्न और श्रीफल भेंट किया जाता है। इस वर्ष ऋषि मेले के अवसर पर जिन **महानुभावों को सम्मानित** किया गया, उनके नाम तथा पुरस्कार इस प्रकार हैं-

१. प्रोफेसर राजेन्द्र जी 'जिज्ञासु' को ''आर्य मार्तण्ड पुरस्कार'' के रूप में एक लाख, एक हजार रुपये।

२. श्री सत्यानन्द जी वेदवागीश को ''श्री ओममुनि जी के परिवार की ओर से सम्मान'' के रूप में इक्कीस हजार रुपये। **३. डॉ. रामप्रकाश जी वर्णी** को ''दीपचन्द आर्य धर्मार्थ न्यास पुरस्कार'' के रूप में इक्कीस हजार रुपये। **४. आचार्य सोमदेव आर्य** जी को ''स्वामी देवेन्द्रानन्द वैदिक धर्म प्रचारक पुरस्कार'' के रूप में ग्यारह हजार रुपये। ५. **आचार्य सत्येन्द्र आर्य जी** को ''स्वामी आशुतोष आर्ष अध्यापक पुरस्कार'' के रूप में ग्यारह हजार रुपये। **६. डॉ. नयन कुमार आचार्य जी** को ''स्व. श्रीमती सुमन लता देवी पत्नी इन्द्रजित् देव आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार'' के रूप में ग्यारह हजार रुपये। **७. डॉ. धर्मवीर जी कुण्डू** को ''डॉ. रघुवीर सिंह सुधारक वेदोपाध्याय पुरस्कार'' के रूप में ग्यारह हजार रुपये। **८. आचार्य यशवीर जी शास्त्री** को ''डॉ. मुमुक्षु आर्य आर्ष-पाठविधि पुरस्कार'' के रूप में ग्यारह हजार रुपये। **९. श्री गौरव जी आर्य** को ''विश्वकीर्ति आर्य युवा कार्यकर्त्ता पुरस्कार'' के रूप में ग्यारह हजार रुपये।

ऋषि उद्यान में संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल के जिन ब्रह्मचारियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई उनके नाम, दानदाता तथा राशि इस प्रकार हैं-

१. ब्रह्मचारी शक्तिनन्दन जी को ''स्व. श्री कन्हैयालाल जी लोहिया, कडैल छात्रवृत्ति'' के रूप में साठ हजार रुपये। **२. ब्रह्मचारी लोकेश जी** को ''श्री ब्रह्मदत्त शर्मा एवं श्रीमती शकुन्तला देवी आर्ष छात्रवृत्ति'' के रूप में बाईस हजार रुपये। **३. ब्रह्मचारी दिलीप जी** को ''श्रीमती सुगनी देवी आर्ष ईनाणी छात्रवृत्ति'' के रूप में इक्कीस हजार रुपये। **४. ब्रह्मचारी गणपति जी** को ''श्री बिरदीचन्द आर्ष इनाणी छात्रवृत्ति'' के रूप में इक्कीस हजार रुपये।

परोपकारिणी सभा परमपिता परमात्मा से सभी सम्मानित विद्वानों, प्रचारकों, कार्यकर्त्ताओं और छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारियों के उज्ज्वल एवं मंगलमय दीर्घ निरोगी जीवन की कामना करती है।

वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता में भाग लेने एवं पुरस्कार प्राप्त करने वालों के नाम तथा राशि निम्नानुसार हैं-

यजुर्वेद कण्ठस्थ करने वाले- १. विजय शर्मा को पन्द्रह हजार रुपये (प्रथम स्थान) २. आलोक मिश्रा को तेरह हजार रुपये (द्वितीय स्थान) ३. कु. अनूशा को ग्यारह हजार रुपये, (तृतीय स्थान) ४. कु. महिमा को दस हजार रुपये, (सान्त्वना राशि),- ५. नारायण मिश्रा को पाँच हजार रुपये ६. ब्र. मनीष को इक्कीस सौ रुपये, ७. अमन पाराशरी को इक्कीस सौ रुपये ८. अभिषेक मिश्रा को इक्कीस सौ रूपये प्रोत्साहन राशि।

सामवेद कण्ठस्थ करने वाले- १. कु. आयुषी को पन्द्रह हजार रुपये, (प्रथम स्थान) २. कु. स्नेहा को तेरह हजार रुपये (द्वितीय स्थान) ३. कु. सुनीति को ग्यारह हजार रुपये, प्रोत्साहन राशि- ४. ब्र. नीरज को पाँच हजार रुपये, ५. ब्र. सादानन्द को इक्कीस सौ रुपये।

यजुर्वेद, सामवेद कण्ठस्थ प्रतिभागियों में तृतीय पुरस्कार पर्यन्त सम्पूर्ण यजुर्वेद भाष्य व सामवेद भाष्य तथा सभी वेद कण्ठस्थ प्रतिभागियों को वैदिक साहित्य और एक-एक हजार रुपये मार्गव्यय भी दिया गया।

वेद गोष्ठी समाचार

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऋषि मेले के अवसर पर अन्ताराष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान और परोपकारिणी सभा अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में दो दिवसीय २८ वीं अन्ताराष्ट्रीय वेद गोष्ठी का आयोजन ऋषि उद्यान में किया

गया। इस वर्ष वेद गोष्ठी का संयोजन **डॉ. कृष्णपाल सिंह**, जयपुर तथा संचालन **आचार्य ज्ञानेन्द्र आर्य जी** ने किया। यह गोष्ठी चार अलग-अलग सत्रों में **आचार्या सूर्यादेवी**, **डॉ. वेदपाल** (मेरठ), **श्री सत्येन्द्र सिंह आय** (मेरठ), **आचार्य सत्येन्द्र आय** (ऋषि उद्यान, अजमेर) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इसमें भाग लेने वाले प्रतिष्ठित विद्वानों के नाम तथा उनके शोध पत्र निम्नलिखित हैं-

१. श्री बाबूलाल जोशी, इन्दौर (म.प्र.), विषय- 'गायत्री परिवार और वेद' २. सुश्री सुनीता आर्या, गुरुकुल शिवगंज, विषय- 'बौद्धमत या भ्रान्त मत' ३. आचार्या सूर्या देवी, गुरुकुल शिवगंज, विषय- 'स्वामी नारायण मत एवं वेद' ४. डॉ. कृष्णपाल, जयपुर, विषय- 'अद्वैतमतान्तर्गत ''अहं ब्रह्मास्मि'' वाक्य-मीमांसा' ५. सुश्री पूजा आर्या, गुरुकुल शिवगंज, विषय- 'दादूपंथ और वेद' ६. श्री शिवदेव आर्य, गुरुकुल पौंधा देहरादून, विषय- 'यथार्थता में बौद्धमत का स्वरूप' ७. आचार्य अमरदेव मीमांसक, सहारनपुर (उ.प्र.), विषय- 'सिख पंथ एवं वेद' ८. सुश्री वृजेशार्या, गुरुकुल शिवगंज, विषय- 'गोसांई मत और वेद' ९. डॉ. धर्मवीर कुण्डू, रोहतक, विषय - 'भारतीय निरंकारी मत वेदमतन्वेति' १०. डॉ. वेदपाल जी, मेरठ, विषय- 'उदासीन सम्प्रदाय और वेद' ११. सुश्री सुमति आर्या, गुरुकुल शिवगंज, विषय- 'स्वामी नारायण मत, वेद के आलोक में' १२. श्री नयन कुमार आचार्य, परली (महाराष्ट्र), विषय- 'वारकरी सम्प्रदाय और वेद' १३. सुश्री ऋतम्भरा आर्या, गुरुकुल शिवगंज, विषय- 'बौद्धमत और वेद' १४. श्री सत्येन्द्र सिंह, मेरठ, विषय- 'अवैदिक मत- कबीर मत' १५. सुश्री शिवानी आर्या, गुरुकुल शिवगंज, विषय- 'देव समाज और वेद' १६. श्री माधव देशपाण्डे, पुणे (महाराष्ट्र), विषय- 'समर्थ रामदास सम्प्रदाय और वेद' १७. आचार्य सत्येन्द्र आर्य, ऋषि उद्यान, विषय- 'भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद' १८. सुश्री माधुरी आर्या, गुरुकुल शिवगंज, विषय- 'दादू पंथ और वेद' १९. श्री आशुतोष पारीक, अजमेर, विषय- 'स्वामी नारायण मत-विवेचन व विश्लेषण' २०. डॉ. कृष्णपाल शास्त्री, गुडगाँव (हरियाणा), विषय- 'बौद्धमत और वेद' २१. आचार्य संदीप आर्य, गुरुकुल काँगड़ी (हरिद्वार), विषय- 'ब्रहमाकुमारी मत में ''जीवात्मा स्वरूप'' वेद की तुलना में।'

गोष्ठी के अन्त में परोपकारिणी सभा के प्रधान **डॉ. धर्मवीर जी** ने सभी शोधार्थियों, संयोजक तथा संचालक का धन्यवाद दिया। शान्ति पाठ के साथ ही इस वर्ष की वेद गोष्ठी का समापन हुआ।

*** आचार्य डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रमः-** **(क) २७-२९ नवम्बर २०१५** गुरुकुल होशंगाबाद में उपदेश किया। **(ख) ४-६ दिसम्बर २०१५-** आर्य समाज नागौरी गेट हिसार के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान करेंगे। **(ग) १०-१३ दिसम्बर २०१५** बीकानेर में उपेदश करेगें।

*** आचार्य सोमदेवजी का सम्पन्न प्रचार कार्यक्रमः-** **(क) २३-२४ नवम्बर २०१५** आर्य समाज राजबाडा, अलवर के वार्षिकोत्सव में मुख्य ब्रह्मा के रूप में प्रवचन किया।

(ख) २५ नवम्बर २०१५ - मालपुरा में यज्ञ व उपदेश किया **(ग) २८-२९ नवम्बर २०१५** लखनऊ में सत्संग प्रवचन किया।

आगामी कार्यक्रम :- (क) २९-१ दिसम्बर २०१५ आर्य समाज आदर्शनगर लखनऊ में व्याख्यान करेंगे। **(ख) ६ दिसम्बर २०१५** - पानीपत में युवा सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित करेंगे। **(ग) ११-१३ दिसम्बर २०१५** - आर्य समाज गोविन्द नगर, कानपुर के वार्षिकोत्सव में उपदेश करेंगे।

*** आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम :-** **२७-२९ नवम्बर २०१५** सहारनपुर में सामवेद पारायण यज्ञ करवाया।

*** महर्षि दयानन्द उद्यान (गुरुकुल आश्रम) ग्राम जमानी, इटारसी** की ओर से प्रचार प्रसार:-

(क) आचार्य सत्यप्रिय जी ने जमानी गाँव में रविवारीय यज्ञ सत्संग का आयोजन किया, जिसमें ३०-४० लोगों ने लाभ उठाया।

(ख) डॉ. धर्मवीर जी का जमानी ग्राम के कस्तूरबा स्कूल में व्याख्यान।

(ग) गुरुकुल आश्रम में प्रातः काल प्रतिदिन आर्यवीर दल की शाखा **आ. सत्यप्रिय जी एवं ब्र. निरंजन जी** के सानिध्य में लगती है जिसमें ३०-४० आर्यवीर प्रतिदिन आसन, प्राणायाम, लाठी, जूडो-कराटे का प्रशिक्षण लेते हैं।

* आचार्य सत्यजित् जी द्वारा **वेदान्त दर्शन** का अध्यापन **१ दिसम्बर २०१५** से प्रारम्भ हो चुका है और **१ जनवरी २०१६** से **मीमांसा दर्शन** का अध्यापन प्रारम्भ होगा।

आर्यजगत् के समाचार

१. छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह का आयोजन- मानव सेवा प्रतिष्ठान का वार्षिक समारोह दिनांक २५-१०-२०१५ को चौधरी छोटूराम भवन, केशवपुरम् दिल्ली के प्रांगण में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रात: ८ बजे आर्यजगत के प्रसिद्ध भजनोपदेश पण्डित सत्यापाल जी पथिक एवं श्री चन्द्र देव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ द्वारा हुआ।

सभा के रामपाल शास्त्री द्वारा मानव प्रतिष्ठान के इतिहास पर प्रकाश डाला गया तथा नरजीत छिकारा ने जाट मित्र मण्डल के इतिहास को बताया । इस कार्यक्रम में आर्यजगत के नौ विद्वान् विदुषियों का सम्मान करते हुए उन्हें प्रशस्तिपत्र, शाल, स्मृति चिह्न एवं ११-११ हजार रुपये की सम्मानित राशि से सम्मान किया गया।

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा भी १२५ विभिन्न शिक्षा संस्थाओं, गुरुकुलों के छात्र-छात्राओं को ७ लाख रुपये की सहायता प्रदान कर उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने छात्रवृत्ति के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए ऐतिहासिक विवरण बताये।

२. गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार सम्पन्न - वैदिक विद्वानों को सम्मानित करने हेतु इलाहाबाद संग्रहालय में आयोजित २६ वें पुरस्कार समारोह का डॉ. रामप्रकाश कुलाधिपति गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने दीप प्रज्वलित करके उद्घाटन किया।

समिति के प्रधान श्री राधेमोहन जी ने समागत विद्वानों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। समिति के मंत्री डॉ. आनन्द कुमार श्रीवास्तव ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। समिति के मंत्री डॉ. राम प्रकाश जी को उनकी महत्त्वपूर्ण कृति 'गुरु विरजानन्द दण्डी' पर २१०००/- रुपये की पुस्कार राशि एवं स्मृति चिह्न तथा अंगवस्त्रम् से अलंकृत किया। उस समय तालियों की गड़गड़ाहट से सभागार गूँज उठा।

३. पुरोहित प्रशिक्षण शिविर- आर्य समाज कोलकाता बड़ा बाजार, हावड़ा भवानीपुर (स्त्री आर्य समाज) आसनसोल के आर्य पुरुषों ने ऋषि दयानन्द के अनन्य अनुयायी वैदिक विद्वान् पं. ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति की याद में एक विशाल पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन बहुत धूमधाम से कोलकाता आर्य समाज १ए विधान सरणी में २७ सित. से ४ अक्टू. २०१५ आयोजित हुआ । उसमें ६५ आर्य समाजों के १०९ प्रशिक्षुओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। सभी पदाधिकारियों एवं गण मान्यों का पूर्ण सहयोग रहा।

४. दीक्षान्त उत्सव सम्पन्न - दिनांक ३०, ३१ अक्टूबर एवं १ नवम्बर २०१५ को कन्या गुरुकुल नजीबाबाद का दीक्षान्त उत्सव सम्पन्न हो गया। गुरुकुल काँगड़ी के पूर्व कुलपति डॉ. वेदप्रकाश, डॉ. भारत भूषण, सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु एवं वेद के तलस्पर्शी विद्वान् स्वामी वेदानन्द सरस्वती उत्तरकाशी के करकमलों द्वारा उपाधि वितरण किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने पं. चमूपति जी द्वारा गुरुवर विरजानन्द जी के प्रति लिखित श्रद्धांजलि गीतिका 'जय जय जय ऋषि प्रसव सुहागिन' मधुर संगीत में प्रस्तुत करके सभी अभ्यागतों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इसके अतिरिक्त प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, कँवर सुखलाल, आर्य मुसाफिर एवं पं. प्रकाश चन्द्र कविरत्न जी के गीतों की प्रस्तुति ने आगन्तुकों का मन मोह लिया। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत दो संस्कृत नाटक शिवराज विजय एवं यक्ष युधिष्ठिर संवाद के मंचन भी आकर्षण का केन्द्र रहे।

रक्त रंजित इतिहास सम्मेलन में बालिकाओं ने पं. चिरंजीलाल पहलवान, लाला देवराज जी, लाला मुंशीराम, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, महाशय कृष्ण, पं. शान्ति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, पं. रुचिराम तथा वीर वेद प्रकाश जी आदि के जीवन की गौरवपूर्ण झलकियाँ प्रस्तुत की। योग सम्मेलन भी विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा । इसमें बारह बालिकाओं ने क्रमश: योग के अन्तर्गत यम-नियमों का महत्त्व तथा उनका स्वरूप निरूपण बड़ी कुशलता पूर्वक किया। इस सम्मेलन में प्रो. जिज्ञासु जी का सम्बोधन विशेष प्रभावशाली रहा। आचार्या प्रियम्वदा वेदभारती जी के दीक्षान्त सन्देश ने तो मानो ऋषियों के युग को ही प्रस्तुत कर दिया। पं. मदनमोहन जी गंगापुर,सिटी एवं ठाकुर विक्रमसिंह जी की उपस्थिति ने उत्सव को चार चाँद लगा दिए।

संस्कृति सम्मेलन का आयोजन स्वामी वेदानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन के मुख्य वक्ता भी पूज्य स्वामी जी ही थे। इसका संयोजन गुरुकुल

को पूर्व छात्रा आचार्या कल्पना जी ने किया। नारी सम्मेलन का विषय था ''नारी-दिशा और दशा'' इस सम्मेलन में बालिकाओं की एक वार्ता का अयोजन किया गया।

व्यायाम प्रदर्शन, विद्यालय की लगभग पचास बालिकाओं द्वारा कोरियन ताईक्वाण्डो का अभ्यास तथा इनके नयनाभिराम रोमाचकारी प्रदर्शन ने दर्शकों को दाँतों तले अंगुली दबाने पर मजबूर कर दिया। स्मरणीय है कि विद्यालय की छात्राएँ चण्डीगढ़ में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में चार स्वर्ण एवं तीन रजत पदक प्राप्त कर चुकी हैं तथा दस बालिकाएँ ब्लैक बैल्ट सम्मान से सम्मानित हो चुकी हैं। यह सम्मान अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति द्वारा नामित कोरियन समिति द्वारा प्रदान किया जाता है।

५. बलिदान दिवस मनाया - दिनांक ११/११/२०१५ को दीपावाली के शुभ अवसर तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर आर्य समाज मंदिर, पिलानी में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। आर्य समाज के प्रधान श्री विनोद बदगढ़िया ने कहा कि राष्ट्रीय भाषा, गोरक्षा, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह आदि सभी विषयों पर महर्षि का योगदान अविस्मरणीय है। महर्षि दयानन्द ने वेद भाष्य करके वेदज्ञान सभी के लिए सुलभ करवाया।

६. शिविर सम्पन्न- देवऋषि विद्यापीठ नन्दगढ़ के प्रिंसिपल सुरेन्द्र शास्त्री, देवऋषि विद्यापीठ के निदेशक पवन कादयान, आर्य वीर दल जीन्द के मण्डलपति यज्ञवीर आर्य तथा सभी लोगों ने विद्यालय में आयोजित युवा निर्माण के शिविर में प्रशंसा की। बच्चों ने अपने प्रदर्शन ने सभी को रोमांचित कर दिया। व्यायाम शिक्षक श्याम आर्य के व्यायाम प्रदर्शन ने सभी का मन मोह लिया।

७. वार्षिक उत्सव सम्पन्न- आर्य समाज, मगरा पुजैला जोधपुर का ७९वाँ वार्षिक उत्सव दिनांक २४,२५ व २६ अक्टूबर २०१५ को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें वैदिक विद्वान् पूज्य स्वामी विदेह योगी कुरुक्षेत्र एवं भजनोपदेशक डॉ. कैलाश कर्मठ कोलकाता वाले, मंत्री भारतीय आर्य भजनोपदेशक विद्वान् स्वामी विदेह योगी का दो शिक्षण संस्थाओं में योग प्रवचन का कार्यक्रम रखा।

दिनांक २४-१०-२०१५ को श्री किशनलाल आर्य, मंत्री के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

पं. विश्वनाथ जी अपना कार्य पिम्परी आर्य समाज से पुरोहित कार्य तारीख १.१०.२०१५ से छोड़कर गये हैं। अभी आर्य समाज पिम्परी पुना १७ ने श्री हेमन्त कुमार आर्य को रखा है। वे सभी सोलह संस्कार वैदिक पद्धति से कराते हैं। वे संगीत में पारंगत हैं और गायन कला में निपुण हैं, अतः बुकिंग के लिए आर्य समाज पिम्परी कार्यालय को संपर्क करें।

८. श्रीवत्स जयन्ती सम्पन्न- ओड़िशा आर्य समाज के संस्थापक, प्रथम आर्यसमाजी एवं ओड़िशा के गंजाम जिला अन्तर्गत तनरडा ग्राम में जिनके शुभ करकमलों से ०३ जुलाई १९२८ को सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना हुई, जो सत्यार्थप्रकाश और संस्कार विधि के ओड़िया भाषा के प्रथम अनुवादक थे, उन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति, जमीन, जायदाद गौशाला एवं आर्य कन्या गुरुकुल को समर्पित कर दी, जिन्होंने जीवनभर जाति-प्रथा, बलि-प्रथा, बालविवाह अन्धविश्वास आदि कुरीतियों के खिलाफ लड़ते रहे, ऐसे ओड़िशा आर्यसमाज के दैदीप्यमान नक्षत्र, संस्कारक श्री वत्स पण्डा जी की १४५वीं जन्म जयन्ती उन्हीं के कर्मभूमि गंजाम जिले में स्थित श्रीवत्स गोरक्षा आश्रम में ०१.१०.२०१५ को मनाई गई। इस जन्म जयन्ती के समस्त कार्यक्रम ओड़िशा आर्य समाज के युवा वैदिक विद्वान् गुरुकुल हरिपुर के संचालक तथा गोरक्षा आश्रम के मन्त्री डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य के संयोजकत्व में एवं ओड़िशा के सभी शीर्ष संन्यस्त एवं विद्वान् गण यथा- श्री स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री स्वामी सुधानन्द सरस्वती, श्री स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द पण्डा आदि की अध्यक्षता एवं मुख्यातिथ्य में सम्पन्न हुए।

सभी ने एक स्वर से संकल्प लिया कि १५०वीं जयन्ती आर्यजगत् के शीर्ष पूज्य- संन्यस्तवृन्द एवं वैदिक विद्वानों की उपस्थिति में ऐतिहासिक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न करेंगे। इस जन्म जयन्ती कार्यक्रम में लगभग दो हजार आर्यजनों की उपस्थिति थी।

९. सामवेद महायज्ञ- परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द सरस्वती उद्यान (गुरुकुल आश्रम) ग्रा. जमानी इटारसी, म.प्र. में तीन दिवसीय सामवेद महायज्ञ १२ से १४ जनवरी २०१६ तक आयोजित किया जा रहा है। सम्पर्क- ०७५०९७०६८२८, ०९४२९०४०३१०

ऋग्वेद पारायण यज्ञ

ऋषि-मेले की झलकियाँ

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक   प्रेषण : १५ दिसम्बर, २०१५   ३९५९/५९

ऋषि मेले की झलकियाँ

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

सेवा में,